सूचीपत्र भेद बानी जिल्द ४

(उ)

(ए)

(क)

(घ)

[च]

[द]

[ध]

गलत नामा भेद बानी जिल्द ४

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	४	ओर	डोर	५	५	हिय	हिये
३	३	सहसदम	सहसदल	७	१	राधास्वासी	राधास्वामी
३	३	गिनरखूं	निरखूं	७	२	पकड	पकड़
४	१	चरच	चरन	७	४	देरश	दरश
५	२	मैं	मैं	८	३	अवमन	मन

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	६	स्वच्छ	तुच्छ	१६	३	गुरु	गुरू
१०	३	राधास्वामी	राधास्वामी	१६	५	२९१	२०१
१०	६	घुनकार	धनकार	१७	१	मोपे। धरसे	मोपे धुरसे।
११	२	सूनती	सुनती	१८	२	मे - वड़	मैं वड़
१२	२	सूरत	सुरत	१८	२	वैढार	विढार
१४	२	वोहार	ब्योहार	१९	१	अपना	अपने

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९	२	लीना	लीला	२०	७	उमंग गुरु २	उमंग २ गुरु
१९	४	२७	२०	२१	१	धुन	शब्द धुन
१९	७	सन	सुन	२१	२	रस आनंद	आनंद
२०	२	गरु	गुरु	२४	३	नाता	नात
२०	३	४ ६	४	२५	२	चड़	चढ़
२०	५	उमंग	चढ़ी उमंग	२५	५	प्रकाशत	प्रकाश

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९	१	योस	याले	३३	७	अँठी	बैंठी
३०	७	भवर गुफ़ा	भंवरगुफ़ा	३४	३	गुरू	गुरु
३१	७	दातार	दातारा	३४	५	हिरदे	रिदे
३२	७	मरा	मेरा	३५	३	भारीसुरत	भारी।सुरत
३३	१	पावे	पावत	३५	५	सुनत में	सुनत में
३३	३	घरे	धरे	३६	१	सहाती	सुहाती

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३६	५	लगावँ	लगावे	४०	६	अलम	अमल
३६	७	गुरु	गुरू	४०	७	गुरु	गुरू
३९	८	झाड़ ।	। झाड़	४१	४	सिपाई	सिपाही
४०	२	जोती	जती	४३	१	राज	राज़
४०	३	धोका	धक्का	४३	१	परवट	परवट
४०	४	विदा	विद्या	४४	२	गुरू	गुरु

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५	२	गुरू	गुरु	५२	१	जहां का	जहां कि
४५	४	घारे	धारे	५३	४	सेर हे	सेर है
४७	२	में	में	५३	५	ऊपर	ऊपर है
४७	६	राधास्वामी	राधास्वामी	५७	१	लगी है	लगी
४८	७	अब मन	अब मन में	५७	३	कीना	कीनो
५१	५	म	में	५९	३	जिव	जिव

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५९	६	राधास्वामी	राधास्वामी	६२	५	अस अस	अस
६०	१	संपूर छोड़	संपूरन। छोड़	६३	३	स्वामी	स्वामी
				६२	७	उलठ	उलट
६०	६	अर्मा	अर्मी	६३	७	झाको	झांको
६०	७	दारी	ढ़ारी	६४	२	जंह	जहं
१	७	धजव	अजब	६४	२	फुस वारी	फुलवारी

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६४	५	सहस हल	सहसदल	८३	७	राधास्वामी	राधास्वामी
७३	५	ढ़िग	ढिग	८४	३	१५७	१६६
७६	१	गाग	गाया	८४	४	गुरु	गुरू
७८	२	राधास्वामी	राधास्वामी	८८	२	मैं	में
७९	४	२५	१२५	८९	७	चल रह	चल रहो
८१	७	आंग	ऒंग	९०	१	तोंड़ी	तोड़ो

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९१	७	गुरु	गुरू	१०४	१	राधास्वामी	राधास्वामी
९२	७	गुरु	गुरू	१०६	२	साटा	सोटा
९३	७	श्रत	स्रुत	११२	१	सरन म	सरन में
९९	२	सका	सफ़ा	११५	७	राधास्वामी	राधास्वामी
१००	१	का	की	१२२	१	पाये	पाई
१०२	५	कर	करें	१२९	५	राधास्वामी	राधास्वामी

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३२	३	घरे	धरी	१४३	५	गुरु	गुरू
१३३	६	राघास्वामी	राधास्वामी	१४३	६	गुरु	गुरू
१३४	६	का	की	१४४	२	राघास्वामी	राधास्वामी
१३७	४	ग्रलख	अलख	१४४	५	राघास्वामी	राधास्वामी
१३७	४	घून	धुन	१४८	२	स्वामी	स्वामी
१४२	५	वसाय	वसान	१५४	६	सरोवर	सरवर

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५७	४	कहन	कहा	२०९	७	किवारि	किवाड़ी
१५९	५	राधास्वामी	राधास्वामी	२१६	७	४९१	५९१
१६०	३	भागे	भाखे	२१७	६	मोहि	मोह
१६६	७	सूरत	सुरत	२३६	१	को	का
१७२	६	सतपुरप	सतपुरप	२४८	५	खुरप	पुरष
१८७	१	राधास्वामी	राधास्वामी	२४९	२	७६	८२

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४९	६	घकवी	चक्रवी	२६४	१	सुत	सूत
२५३	२	फी	फी	२७१	२	पाधे	पावे
२५३	४	वहां	वहां	२७७	३	गावे	गावें
२५५	३	वाह	बांह	२८३	७	चक्कर	चक्कर
२५५	३	भूल	भूल	२८४	१	को	के
२६०	२	धार	धौर	३११	१	मनमैं	मन में
२६०	७	जन	जम	३११	१	तनमैं	तन में
२६३	१	काभी	कमी २				

राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय

प्रे० वा० १ नं० श० ९७ (शब्द १) सफ़ा ५६२

करी राधास्वामी मेहर नई। उमंग वह अंतर जाग रही ॥१॥
उठत सेवा की नई तरंग। चरन गुरु दिन २ बाढ़त रंग ॥ ॥
विविध सब सामा लाई साज। करूं गुरु आरत अद्भुत आज
जुड़ा हंसन का जहां समाज। होत अब सब का पूरन काज ॥
दया राधास्वामी हिये में चीन्ह। गावती महिमा होय लौ लीन

देख अस सोभा हरखत मन । कहत धन २ राधास्वामी धन २॥६

मेहर बिन क्या सेवा बन आय । दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय

याद गुरु करत रहूं हर बार । ध्यान उन धरत रहूं कर प्यार ॥८॥

प्रीत गुरु ओर बंधी मज़बूत । लाग रहा गुरु चरनन से सूत ॥ ९ ॥

देख मोहिं दीन अधीन अनाथ । रखा मेरे सिर पर गुरु ने हाथ १

हिये में दृढ़ परतीत धरी । मान मद माया सकल हरी ॥ ११

कहां लग राधास्वामी गुन गाऊं । दई मोहिं चरनन में ठाऊं ॥१२

करूं मैं विनती चरनन में। देव मोहिं धुन रस अंतर में ॥ १३ ॥
सुनूं मैं घट में अनहद शोर। शब्द रस पिऊं सुरत मन जोड़ ॥ १४
खोल तिल पट को देख वहार। सहस दम निरखूं जोत उजार
बंक धस त्रिकुटी चढ़ जाऊं। दरश गुरु निरखत हरखाऊं ॥ १६ ॥
सुन्न चढ़ तिरवेनी न्हाऊं। दाग कल मल के धुल वाऊं ॥ १७ ॥
महा सुन घाटी चढ़ गुरु बल। भंवर का शब्द सुनूं चढ़ चल १८
सत पुर सुनूं बीन धुन तान। पुर्ष के चरनन लाऊं ध्यान ॥ १९ ॥

अलख चढ़ अगम में पहुंचू धाय। चरन राधास्वामी परसूं जाय
मेहर से पाऊं गृह निज धाम। करै मेरी सूरत वहां बिश्राम ॥२१

प्रे बा १ नं० श. १०६ (शब्द २) सफ़ा ५७८

जगत में खोज किया बहु भांत। न पाई मैंने घट में शांत ॥१॥
गौर कर देखा जगका हाल। फंसे सब करम भरम के जाल २।
फैल रहे जग में मते अनेक। धार रहे थोथे इष्ट की टेक ॥३॥
भेद कोई घर का नहिं जाने। भरम बस सीख नहिं माने ॥४।

मान में खप रहे पंडित भेख। कर्म में बंध रहे मुल्ला शेख॥५॥
भाग मेरा जागा अजब निदान।मिला मैं राधास्वामी संगत आन
सुनी मैं महिमां अचरज बोल।
करी मैं राधास्वामी मत की तोल ॥ ७ ॥
भरम और संशय उठ भागे। विरह अनुराग हिय जागे ॥८॥
पता निज मालिक का पाया। भेद निज घर का दरसाया ॥९॥
समझ में आई भक्ती रीत।शब्दकी धारी मन परतीत

सुरत का पाया अजब लखाव । सिफत सुन गुरु की बढ़ा भाव
कहूं क्या महिमां सतसंग सार ।
भरम और संसय दीने टार ॥ १ ॥
प्रीत नित बढ़ती गुरु चरना । धार लई मन में गुरु सरना १३
समझ मैं मन में अस धारी । संत बिन जाय न कोई पारी
बिना उन सरन न उतरे पार । शब्द बिन होये न कभी उधार
सराहूं छिन २ भाग अपना । मिला मोहिं सुरत शब्द गहना

हुआ मेरे हिरदे में उजियार। दया राधास्वामी कीन अपार
पकड धुन चढ़ता नभ की ओर।जोत लख सुनता अनहद घोर
सुन्न धुन सुनकर चढ़ी आगे गुफा में जहां सोहंग जागे
सतपुर देरश पुरुप कीन्हा। परे तिस अलख अगम चीन्हा
वहां से लखिया राधास्वामी धाम
मिला अब निज घर किया विस्राम

प्रे० बा० १ नं० श ११० (शब्द ३) सफा ५८८

प्रेम गुरु महिमां सुनत रही। नाम गुरु हिये में गुनत रही १
संग गुरु पाया जागा भाग। वढ़त अब दिन २ हिये अनुराग
मेहर हुई आई अब मन परतीत।
गाऊं अब निस दिन सतगुरु गीत ॥ १३ ॥
सरन राधास्वामी हिरदे धार।
बोझ में डाला सबही उतार ॥ ४ ॥
रीत जग अब मोहिं नहीं भावे।

नहीं मन भोगन संग धावे ॥ ५

करम और भरम उड़ाय दिये ।
बरत और तीरथ वाहय दिये ॥ ६ ॥
भेख और पंडित मान भरे । जगत गुरु चित से दूर करे ७
कथा पंडों की क़िस्सा जान । सुनूं नहीं कबही देकर कान ८
देव और देवी नहीं मानूं । राम और कृश्न स्वच्छ जानूं ९
मेरे घर लागा गुरु का रंग । तजूं नहीं कबही उनका संग १०

सुनूं मैं चित से गुर उपदेश ।
गाऊं नित महिमा राधास्वामी देश ॥ ११ ॥
नाम राधास्वामी नित गाऊं । चरन राधास्वामी नित ध्याऊं
सुरत और शब्द जुगत निज सार ।
कमाऊं निस दिन हिये धर प्यार ॥ १३ ॥
मेहर गुरु सुनती धुन घुनकार ।
निरखती नभ चढ़ जोत उजार ॥ १४ ॥

अंगर चढ़ गरजे गुरु गरजा । सुन्नमें जाय सुरत भरना १५
महासुन्न पार गई गुरु संग । भंवर चढ़ सुनती धुन सोहंग १६
सतपुर दरशन सम्पूर्ण कीन ।
धाम रही अलखपुर जहां धुन बीन ॥ १७ ॥
अगमपुर जाकर गोता मार ।
अनाम चढ़ देखा अगम पसार ॥ १८ ॥
मिले निज राधास्वामी धाम दिदार ।

महीं कुछ अचरज कहा न जाय ॥ १९ ॥
प्रेम अंग आरत यहां कीनी । सूरत हुई चरनन में लीनी २०
मेहर राधास्वामी पाई आज ।
किया मेरा सब विधि पूरन काज ॥ २१ ॥

प्रे० बा २ नं श २७ [शब्द ४] सफ़ा ५५

प्रीत नवीन हिये अब जागी । गुरु चरनन में सूरत लागी ॥१॥
सतसंग करत मगन हुआ मन में ।

फूला नाहिं समावत तन में ॥ २ ॥
संत मते की महिमा जानी ।
राधास्वामी गत अति अगम बखानी ॥ ३
दया मेहर का लीना आसर ।
राधास्वामी नाम जपूं निस वासर ॥ ४ ॥
भजन करत हिये बढ़त उमंगा । सरन धार औपार उलंघा ६
दरशन करत बढ़त नित प्यारा ।

वचन सुनत हिये होत उजारा ॥ ६ ॥
जग वोहार लगत अति रूखा । मन इंद्री मानो तन में सूखा ७
भोगन की आसा तज दीनी । मन हुआ गुरु चरन में लीनी ८
गुरु विस्वास हिये में छाया । थक रहे काल करम और माया
भरम उड़ाय हुआ मन निरमल ।
गुरु चरनन में चित हुआ निश्चल ॥ १० ॥
राधास्वामी चरन वसे अब हिये में ।

प्रीत प्रतीत बढ़ी अब जिये में ॥ ११ ॥
आस भरोस धरा गुरु चरना । सुरत शब्द में निस दिन भरना
घट में सुनता अनहद घोर । काम क्रोध का घट गया ज़ोर १२
घंटा संख सुनी धुन नभ में । गुरु सरूप निरखा गगना में १३
सुन में निरखा चंद्र उजारा । सुनी भंवर धुन सोहंग सारा १५
सतपुर लखा पुरुष का रूप । तिस परे अलख अगम कुल भूप
वहां से आगे सुरत चढ़ाई । निरखा राधास्वामी धाम सुहाई

उमंग उठी हिये में अति भारी । गुरु चरनन में आरत धारी
प्रेम प्रीत से सामां लाया । माता संग गुरु सन्मुख आया
परम गुरु राधास्वामी प्यारे । सब रचना के प्रान अधारे २०
हुये परशन मेहर की भारी । मोसे अधम को लिया उबारी २१

प्रे० बा० २ नं० श० १५ (शब्द ५) सफ़ा २९१

सुरतिया चेत रही गुरु वचन सम्हार २ ॥ १ ॥
परमारथ चित धार हेत कर । पढ़त सुनत रही बानी सार २ ॥

राधास्वामी दया करी मोपै। धुरसे दीना मुझको अगम विचार ३
समझ २ कर सुने बचन गुरु। बूझा परम तत्त निज सार ॥ ४ ॥
शब्द बिना नहिं मारग सूझे। प्रेम बिना नहीं खुले दुआर ॥ ५ ॥
बिन सतगुरु कोई राह न पावे। गत मत उनकी अगम अपार ६॥
ऐसी समझ धार कर हिये में। लीना राधास्वामी चरन अधार
और तरह कोई बाच न पावे। कर्म और काल बड़े बरियार ॥८॥
नीच ऊंच जोनी में भरमे। कभी न होवे जीव उबार ॥ ९ ॥

यातें सबको कहूं सुनाई । सरन गहो सतगुरु दरबार ॥ १० ॥
सेवक भाग कहूं क्या अपना । राधास्वामी लिया मोहिं गोद बैठार
बचन सार मोहिं भाख सुनाये । दरस दिया निज किरपा धार ३
सुरत शब्द का भेद अमोला । सुमिरन ध्यान जुगत कही सार ॥
मन इंद्री को रोक अंदर में । शब्द की परखूं घट में धार ॥ १४ ॥
मन चंचल की चाल निहारूं । दूर हटाऊं सबही बिकार ॥ १५
प्रीत प्रतीत जगाय हिये में । नित प्रति निरखूं नई बहार ॥१६ ॥

राधास्वामी चल हिरदे घर अपना । सुरत चढ़ाऊं गगन मंझार
सहस कंवल त्रिकुटी लख लीना । सुन्न और महासुन्न धसपार
भंवर गुफ़ा का ताक उघारूं । सत अलख और अगम निहार ॥
राधास्वामी धाम अपारा परस चरन रहूं आरत धार ॥ २७ ॥
राधास्वामी परम पुरुष दातारा । चरनन में लिया मोहिं करप्यार

प्रे बा २ नं श ११५ (शब्द ६) सफ़ा ३७१

सुरतिया जाग उठी सुन बचन गुरू के सार ॥ १ ॥

भरमत रही जगत अंधियारी । मिला न सच्चा संग ॥ २ ॥
भाग जगे गरु सनमुख आई । पाया भेद अपार ॥ ३ ॥
मन और सूरत जुड़ मिल आये । धर चरनन में प्यार ॥ ४ ६
काल करम बहु बिघन लगाये पड़ा संगत से दूर ॥ ५ ॥
मेहर हुई उमंग नवीनी आया चरन हजूर ॥ ६ ॥
मेहर की दृष्ट करी सतगुरु ने । दई प्रेम की दात ॥ ६ ॥
उमंग गुरु २ सेवा करती । नित नया भाव जगाय ॥ ८ ॥

सुरत लगाय धुन सुनती । नित नया रस पाग ॥ ९ ॥
रैन दिवस चरनन में रत्ती । नित नया रस आनंद पाग ॥१०
नित नई प्रीत जगत गुरु चरनन । बरनन करी न जाय ॥११॥
धुन रस पाय हुई मतवारी । सुरत गगनको धाय ॥ १२॥
सहंस कंवल लख जोत उजारा । त्रिकुटी गुरु का भाग ॥१३॥
चंद्र चांदनी चौक निहारा । भंवर गुफा सतनूर ॥ १४ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस कर । पाया अगम सरूर ॥ १५॥

तिस के परे अलख दर्स पाया । अगम को परसा धाय ॥ १६

हैरत धाम लखा तिस ऊपर । सोभा कही न जाय ॥ १७ ॥

परम पुरुष राधास्वामी दयाला । अचरज दरशन पाय ॥ १८।

भर २ प्रेम आरती गाती । चरन सरन लिपटाय ॥ १९

मेहर करी गुरु परम सनेही लीना गोद बिठाय ॥ २० ॥

हरख २ मैं नित गुन गाऊं । राधास्वामी सदा ध्याय

प्रे० बा० ३ नं० श० ९ [शब्द ७] सफा ५३९

सिंध से आई सूरत नार। पिंड में आन फंसी नौद्वार ॥ १ ॥
भोग इंद्रियन संग करत विलास। जगत में कीना सत विश्वास
दुःख सुख भोगत मन के माहिं। आप बुध धारी तन के माहिं
करम और धरम रही भरमाय। गुनन संग निसदिन चक्कर खाय
भूलगई यहां आय निज घर बार। न जाने कोई सत करतार
पूजते फिर तम देव अनित्त। भरमते जग बिच धरकर चित्त
भेख और पंडित आप भुलाय। दिया सब जीवन को भरमाय

संतसत गुर बिन नहीं उबार। दयाल वर वही पहुंचावनहार
भाग बढ़ हम सबका जागा। सुत राधास्वामी चरनन लागा
जुड़ा राधास्वामी संगत से नाता। वचन सुन मन बुध पाई शांत
संत मत महिमां जान पड़ी। सुरत गुरु चरनन आन धरी ११
शब्द का लिया उपदेश सम्हार। सुरत मन झांकत मोक्ष दुआर
दया राधास्वामी लेकर संग। करम और भरम किये सब भंग
बरत और तीरथ दिये उड़ाय। मोह जग मन से दिया हटाय

प्रीत गुरु चरनन निप्त बढ़ाय । सुरत मन गट में अधर चढ़ाय
सहसदल देखा जोत उजार । गगन चढ़ निरखा सूर अकार
सुन्न चढ़ लखी चांदनी सार । भंवर में सेत सूर उजियार
अमर पुर कोटन सूर उजास । पाइया सतगुरु चरननिवास
अलख और अगम का देखा विलास । अनामी धाम लखा परकाश
अजब गत राधास्वामी निरखा निहार
मिला अब राधास्वामी सरन अधार

आरती करती उमंग जगाय । चरन राधास्वामी हिये बसाय

प्रे० बा० ३ नं श० १९ (शब्द ८) सफ़ा ५५९

पूरन भक्ति देव गुरु दाता । सुरत रहे तुम चरनन साथा ॥ १ ॥

मन विच प्रीत बढावो दिन २ । गुन गाऊं राधास्वामी छिन २ ॥

जग विच दुख पाये बहु तेरे । हार पड़ा होय चरनन चेरे ॥ ३ ॥ ॥

काल करम मोहि नित भरमावत । मन इंद्री भोगन संग धावत

तुम बिन और न रच्छक मेरा । लीजे मोहि बचाय सबेरा ॥ ५ ॥

सतपुर दरश पुरुष का पाऊं । अलख अगम के पार चढाऊं
राधास्वामी चरन निहारूं । उमंग सहित उन आरत धारूं।१४
पूरन सरन प्रसादी पाऊं । प्रेम सहित नित चरन धियाऊं।१५
उलट जगत में फिर चल आउं ।जीवन को निज नाम सुनाऊं
चरन ओट ले राधास्वामी गाओ। भाग आपना आज जगाओ।
फिर औसर ऐसा नहीं पाओ । चौरासी का फेर बचाओ ।१८
जो कहना नहिं मानो मेरा । जन्म २ दुख सहो घनेरा ॥ १९ ॥

योस आजहि काज बनायो । राधास्वामी २ छिन२ गावो ॥२०॥

वड़े भाग पाई राधास्वामी सरना ।

भौ सागर से सहजहि तरना ॥ २१ ॥

प्रे० वा० ४ नं० श० ९२ (शब्द ९)

सुरतिया वार रही तन मन गुरु चरन निहार ॥ १ ॥

विमल वैराग धार कर मन में । छोड़ दिया संसार ॥ २ ॥

मोह जाल के वंधन काटे । गुरु सेवा में रहे हुशियार ॥ ३ ॥

सतसंग बचन धार कर चित में । मन को छिन२ झारत मार
भोग अंक को काटत छिन२ । राधास्वामी नाम जपत हरबार
ध्यान लगाय बढ़ावत प्रीती । शब्द सुनत हियरे धर प्यार ६
घंटा संख मचावत शोर । छिटक रहा घट जोत उजार ॥७ ॥
अनहद शब्द लगा अब गरजन। चढ़ कर पहुंची गगन मंझार
न्हाई मान सर मैल उतार ॥९॥
द्वारा फोड़ गई अब सुन में । वीन सुनी संतगुरु दरबार ।१०।
भवर गुफ़ा का देख उजाला ।

अलख अगम के पार चढ़ाई। राधास्वामी चरन मिला आधार

तन मन तोड़ किया जब सतसंग। भोग वासना दई निकार ॥

गुरु चरनन में प्रीत घनेरी। किनी छिये से तन मन वार ॥१३॥

दीन गरीबी धार चित्त में। मन का मान दिये सब डार ॥१४॥

तब गुरु परशन्न होय मेहर से। अंग लगाया किरपा धार ।१५।

अस सतसंग करे जो कोई। सोई जावे भौजल पार ॥ १६ ॥

राधास्वामी परम गुरु दातार। पहुंचावे फिर निज घर बार ॥

होय निचिंत बसे सुखसागर।
हरदम राधास्वामी दरश निहार ॥ १८ ॥
अचरज नाम और अचरज रूपा। अचरज मेहर का वार नपार
लख २ भाग सरावत अपना।
राधास्वामी; चरन पकड़ रहीसार
राधास्वामी दयाल सरन हिये धारी
उन मेहर से दिया मेरा काज संवार ॥ २१ ॥

सा० श० नं० २ (शब्द १०) सफ़ा ९९

राधास्वामी मेरे सिंध गंभीर। कोई थाह न पावे धीर ॥ १

रतनन के भरे भंडार। जहां लाल अमोलक सार ॥ २ ॥

सुर्त मीन करे जहां केल। कल काल धरे जहां पेल ॥ १३ ॥

घट प्रेम धार अब उमगी। रस सार पिये कोई संगी ॥ ४ ॥

तिल उलट चली सुर्त प्यारी। देखी वहां जोत उजारी ॥ ५ ॥

दल द्वार खोल कर पैठी। नल पार अविद्या ऐंठी ॥ ६ ॥

माया का चक्र हटाया । ब्रह्म दर्श सहज में पाया ॥ ७ ॥
धुन अनहद सार बजाया । सुन भीतर शब्द जगाया ॥ ८ ॥
गुरू पर अब तन मन वारूं । गुन गावत कभी नहारूं ॥ ९ ॥
क्या महिमां गुरु पद गाउं । मैं नित २ बल २ जाऊं ॥ १० ॥
गुरू मूरत हिरदे छिपाऊं । मन अंदर द्वार खुलाऊं ॥ ११ ॥
गुरू संग लिये मोहिं जावें । सतरूप अधर दरसावें ॥ १२ ॥
कंवलन के बाग़ दिखावें । हंसन संग केल करावें १३

वह आनंद कहत न आई । सुरत भींज रही छवि छाई १४
अमृत रस झड़ी लगाई । छिन २ पर धार चुवाई १५
मन गोता मारन लागी सुर्त । जागी मिटी अंधियारी १६
कोई सज्जन प्रेम बिलासी । देखत और गत्यन पासी १७
गुरु बचन सुनत में हांसी । हुई राधास्वामी चरण निवासी १८
दम २ में प्रेम बढ़ाती । गह सूरत अजब छिपाती १९
में नैन पराग गंवाती । तन मन की सुध बिसराती २०

गुरु मूरत अधिक सहाती । ज्यों चंद चकोर समाती २१
राधास्वामी मौज दिखाई । मैं चरण धूर होय धाई २२

सा० नं० श० ४ (शब्द ११) सफ़ा १०६

गुरु की दया ले शब्द सम्हार । गुरु के संग कर शब्द अधार १
शब्द लगावें तुझ को पार । बिना शब्द चौरासी धार ॥ २ ॥
शब्द कमाई करनी सार । शब्द चढ़ावे दसवें द्वार ॥ ३ ॥
शब्द गुरु संग करले प्यार । और कर्म सब त्यागो झाड़ ॥ ४ ॥

शब्द विना नहिं खेवन हार। शब्दहि करता सब की सार ५
शब्द २ का भेद नियार। सो गुरु तुझ से कहैं सम्हार ॥ ६ ॥
तूतो सुरत जमा नभद्वार। शब्द मिले छूटे जंजार ॥ ७ ॥
शब्द करे अब जग से पार। शब्द माहिं तुम रहो हुशियार ८
शब्दहिं शब्द करो निरवार। शब्द विना कोइ वचे न यार ९
शब्द हटावे सब अहंकार । शब्द छुड़ावे सभी विकार १०
शब्द विना कुछ और न सार। मैं तोहि कहूं पुकार २ ॥ ११

शब्द लगो मत बैठो हार । शब्द नाव चढ़ पहुंचो पार ॥ १२ ॥
शब्द किया जिस घठ उजियार । धन वे जन जिन शब्द अधार ॥
तूभी सुन चढ़ शब्द पुकार । शब्द होय फिर गलका हार ॥ १४
शब्द पकड़ और सब तज डार । बिना शब्द नहीं होतउधार ॥ १५
शब्द भेद तू जान गंवार । क्यों भरमें तू मन की लार ॥ १६।
सुरत खैंच तक तिल का द्वार । दहनी दिसा शब्द कीधार ॥
बाई दिसा काल की जार । ताहि छोड़ कर सुरत सम्हार १८

घंटा संख सुनो कर प्यार। तिस के आगे धुन ओंकार १९
सुन्न माहिं सुन रारंकार। भंवर गुफ़ा मुरली झंकार ॥ २०॥
सत्त लोक धुन बीन सम्हार। अलख अगम धुन कहूं न पुकार२१
राधास्वामी भेद सुनाया। झाड़ पकड़ धरो अब हिये मंझार २२

सा० नं० श० ९ [शब्द १२] सफ़ा २०५

धुन सुनकर मन समझाई ॥टेक॥
कोट जतन से यह नहीं माने। धुनसुनकर मन समझाई ॥१॥

जोगी जुक्त कमावें अपनी । ज्ञानी ज्ञान कराई ॥ २ ॥
तपसी तप कर थाक रहे हैं । जोती रहे जत लाई ॥ ३ ॥
ध्यानी ध्यान मानसी लावें । वह भी धोका खाई ॥ ४ ॥
पंडित पढ़ २ वेद बखाने । विद्या बल सब जाई ॥ ५ ॥
बुधि चतुरता काम न आवे । आलिम रहे पछताई ॥६॥
और अलम का दखल नहीं है । अमल शब्द लौलाई ॥७॥
गुरु मिले जब धुन का भेदी । शिष्य विरह घर आई ॥ ८॥

सुर्त शब्द की होय कमाई। तब मन कुछ ठहराई ॥ ९ ॥
हिर्स हवस से हाथ न आवे। तन मन देव चढ़ाई ॥ १० ॥
बुल हवसी और कपटी जन को। नेक न धुन पतियाई ॥११॥
यह धुन है धुर लोक अधर की। कोई पकड़ें संत सिपाई ११
मन को मार करें असवारी। गगन कोट वह लेंय घिराई १२
खाई सुन्न पार मैदाना। महा सुन्न नाका परमाना ॥ १४ ॥
भंवर गुफ़ा का फाटक तोड़ा। शीस महल सतगुर दिखलाई

अद्भुत लीला अजब वहां की । किरन २ सूरज दरसाई १६
सूरज २ जोत निरारी । चंद्र २ कोटन छवि छाई ॥ १७ ॥
घट अकाश औघट परकाशा । लख अकाश कोटन परसाई १८
यह लीला कुछ अजब पेचकी । उलट पलट कोई गुरु मुख पाई
कहां लग बरनूं भेद अगाधा । जो कोई लावे सुन्न समाधा ॥२॥
समझ बूझ गूंगे गुड़ खाई । अकथ अकह की बात
निराली क्यों कर कहूं बनाई ॥ २१ ॥

राधास्वामी राज छिपेफो । परघट कर सरसाई ॥ २२ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ७३ (शब्द १३) सफ़ा ४९२

सुरत मेरी चरनन लाग रही । सरस धुन घट में बाज रही १
सरन गुरु मन हुआ मेरा लीन । मौज गुरु लागा घटमें चीन्ह २
चरन में दिन २ बढ़ता प्यार । बचन और दरशन मोर अधार ३
करूं मैं सतसंग सहित उमंग । त्याग दई मन से सबही उचंग
प्रेम की धारा रहे जारी । लगत गुरु सेवा अति प्यारी ॥ ५ ॥

सुमिरता राधास्वामी नाम अपार। दरस गुरु देता तन मन वार

सुरत की डोरी चरनन लाय। रहूँ मैं नित गुरू प्रेम जगाय ॥७

संत मत महिमां अपर अपार। नहीं कोई जाने रहे सब वार ८

करम बस फंसे काल के जाल। हुए सब माया संग बेहाल

मेहर मोपै राधास्वामी अचरज कीन।

दया कर चरन सरन मोहि दीन ॥ १० ॥

भाग मेरा सोता दीन जगाय। लिया मोहिं अपने चरन लगाय

दिया मोहिं गुरु भक्ति आधार । शब्द का भेद लखाया सार १२
सरन गुरू क्या कहूं महिमां सार । गही जिन उतरे भौजल पार
सहज जो चाहे जीव उधार । पकड़ गुरु चरन होय जग पार १४
शब्द गुरु धारे दृढ़ परतीत । चरन गुरु छिन २ पाले प्रीत १५
भरम तज दृढ़ आसा लावे । चरन रस तब घट में पावे १६
हुई मोपे राधास्वामी मेहर अपार ।
अमीं रस पियत रहूं हर बार ॥ १७ ॥

सुरत मन चढ़ते फोड़ अकाश । गगन में लखते गुरु परकाश॥
करत जाय हंसन संग मिलाप । गए सब काल कलह त्रियताप
महा सुन सतगुरु संग चाली । भंवर धुन सुन हुई मतवाली॥
लोक सत निरख पुरुष का नूर ।
लखा घर अलख अगम हुई सूर ॥ २१ ॥
परे तिस राधास्वामी धाम अपार ।
लखा हुई चरन सरन बलिहार ॥ २२ ॥

प्रे. बा. १ नं० श० ११८ (शब्द १४) सफ़ा ६१०

खबर में गुरु संगत की पाय ।
मगन हुआ आनंद उरन समाय ॥ १ ॥
भेद गुरु मत का वोहीं लीन ।
हुआ मन चरन सरन आधीन ॥ २ ॥
करत निसदिन अभ्यास सम्हार । दया राधास्वामी परखी सार
देख निज घट में परम विलास । हिये में बढ़ता अजब हुलास

तड़प गुरु दर्शन की उठती । सुरत गुरु चरनन में वसती ॥५॥
मौज से अस औसर पाया । धावता गुरु चरनन आया ॥ ६ ॥
देख गुरु संगत बाढ़ा प्यार । सुनत गुरु वचन तजा अहंकार
दीन होय कीना गुरु संग मेल । काल के विघन निकारे पेल
सुरत मन निस दिन रस पीते । करम और भरम रहे रीते ९
भोग सबहो गये अब बेकार । हुआ मन चरनन पर बलिहार
समझ में आई भकती रीत । बढ़ी अब मन गुरु की प्रीत ॥११॥

हुई चरनन में दृढ़ परतीत । जाऊं अब निज घर भौजल जीत
शब्द की महिमां जानी सार । लगा अब फीका जग ब्योहार
हुआ अब मन में अस बिस्वास ।
शब्द बिन होय न घट उजियास ॥ १४ ॥
समझ अस धार रहूं मन में । शब्द रस पियत रहूं तन में १५
चढ़ाऊं सूरत उलटी धार । फोड़ नभ निरखूं जोत उजार १६
दया गुरु चढ़ूं गगन को धाय ।

मगन रहूं गुरु पद दरशन पाय ॥ १७ ॥
वहां से पहुंचूं दसवें द्वार । सुनूं धुन किंगरी सारंग सार १८
गुफ़ा चढ़ पहुंचूं सतगुरु धाम ।
बीन जहां बजती आठों जाम ॥ १९ ॥
निरख फिर अलख पुरुष का रूप ।
परसती अगम पुरुष कुल भूप ॥ २० ॥
चरन राधास्वामी परसूं धाय ।

आरती गाऊं प्रेम जगाय ॥ २१ ॥
दिया राधास्वामी यह सब साज ।
किया मेरा राधास्वामी पूरनकाज ॥ २ ॥

प्रे० बा० ३ नं गजल २ (शब्द १५) सफ़ा ५८०

अर्श पर पहुंच कर म देखा नूर ।
काल को मारकर मैं फुंका सूर ॥ १
देह की सुध गई जो सुरत चढ़ी ।

जाके बैठी जहां कीपहिले थी ॥ २ ॥
निज गली यार के जो आशिक़ हैं।
भीड़ से अब एकांत लाऊं मैं ॥ ३ ॥
जो कहूं मैं सो कान देके सुनो।
सुर्त खैंचो चढ़ाओ धुन को सुनो ॥ ४ ॥
सिर में है तेरे बाग़ और सतसंग। सैर कर जल्द ले गुरू का रगं
तान पुतली को आंख को मत खोल।

चढ़के आकाश का डुआरा खोल ॥ ६ ॥
जब चढ़े सुरत तेरी अंबर पार ।
देह की सैर कर व देग बहार । ॥ ७ ॥
अचरजी सैर है तेरे नीचे ।
पिरथी ऊपर आस्मां नीचे ॥ ८ ॥
बंक नाल होके आगे सुर्त चली ।
तिरकुटी पहुंच कर गुरु से मिली ॥ ९ ॥

रूप सूरज का लाल क्या बरनूं ।
सहस्र सूरज हैं उसके एक रोमूं ॥ १० ॥
आगे चल सुर्त सुन्न में पहुंची ।
धुन किंगरी व सारंगी की सुनी ॥ ११ ॥
कुंड अमृत भरे नज़र आये । हंस रूप होय मोती चुन खाये १२
सुन्न को छोड़ कर चली आगे । पहुंची महासुन जहां सोहंगजागे
हाल वहांका मैं क्या कहूं क्याहै । जानता है वही जो पहुंचाहै ॥

रास्ते में यहां अंधेरा है। सतगुरु संगहि निर्भय है ॥ १५ ॥
सतगुरु संग ते किया मेरा। काल देश उनका होगया ढेरा ॥ १६
सुर्त चढ़ कर गुफा में पहुंची धाय ।
धुन सोहंग सुनी मुकाम को पाय ॥ १७ ॥
इस मुकाम अचरजी को पाय मिली। गोल निरुफी को अन्दर नचाई
आगे चल सत्त लोक पहुंची धाय ।
और अमी का अहार हम २ पाय ॥ १९ ॥

आगे इसके अलख अगम है मुक़ाम तिस परे हैगा राधास्वामी नाम
यह मुक़ाम है अकह अपार अनाम ।
संत बिन कौन पा सके यह धाम ॥ २१ ॥
भेद सब इस जगह तमाम हुआ । सब हुये चुप्प मैं भी चुप हुआ

सा० नं० श० ३ (शब्द १६) सफ़ा ६६४

भई है सुरत मेरी आज सुहागन ।
लगी है सुरत मेरी छिन जागन ॥ १ ॥

स्वामी २ लगी है पुकारन। राधा २ नाम सम्हारन ॥ २ ॥
गगन मंडल अब लागा गर्जन। भाग गये मेरे घट से दुर्जन ३
तन मन मैंने कीनां अर्पन। लगी सुरत अब सतगुरु चरनन
नाम थाल और बाती सुमिरन। जुक्ति जोत बाली में निज तन
आरत फेर चढ़ाया निज मन। गगन जाय सुनता अनहद धुन
संत कृपा पाया पद पूरन। कर्म भर्म डाले कर चूरन ॥ ७ ॥
साफ़ किया मैं मन का दर्पन। ममता माया कीनी मर्दन ॥ ८ ॥

नूर निरंजन जक्त सम्हारन । सहस कंवल चक्र कीना दर्शन९
सुई द्वार नाकालगी झांकन । पाप अनंत हुये जहां खंडन॥१०॥
बंकनाल धस त्रिकुटी धावत । ओंकार धुन करी अब सबन
सुन्न मंडल धुन पाई रारंग । किंगरी सुनी और बाजी सारंग १२
चंद्र चौक जहां देखा चांदन । हंसन रूप धरे मन भावन १३
महासुन्न सागर चली न्हावन । सूरत मिली जाय महाचेतन
भंवर गुफा द्वारा अतिपावन । धुन मुरली जहां बजत सुहावन

हंसन सोभा मन विगसावन । सुन २ धुन अति प्रेम बढ़ावन
चौक अगाध साधकर चालन । गइ सतपुर लगी पुर्ष मनावन
चौथा लोक त्रिलोकी कारन । संत बसें जिव करें उधारन १८
अलख लोक इक पुर्ष विराजन । बैठे अचरज धार सिंघासन
तिस आगे फिर अगम निहारन । अगम पुर्ष ढिंग सोभा पावन
लगी सुरत निज भेद सुनावन।मिलगये राधास्वामी पतित उधारन
अब अनाम का क्या करूं छानन। सैन कही यह अकह अपारन

भई आरती अब संपूरन छोड़ । दई मैं सभी गुनावन ॥ २३॥

सा० नं० श० २ (शब्द १७) सफा ६८६

लाई आरती दासी सजके । नाम राधास्वामी का छिन २ भजके
सील क्षिमा की ओढ़ चदरिया । काम क्रोध की छांट बदरिया
नाम थाल लिया हाथ पसारी । विरह अग्नि से जोत संवारी
अमीं सरोवर भर लई झारी ।
राधास्वामी सन्मुख कर २ दारी ॥ ४ ॥

अगम लोक के विंजन लाई । राधास्वामी आगे भोग धराई ५
अंबर चीर पीतंबर जोड़े । भेंट किये मैंने हाथी घोड़े ॥ ६ ॥
पांच तत्व गुन तीन सिपाही । मार लिये राधास्वामी की दुहाई
चढ़ी गगन पर कीन्हा धावा । सुरत निरत दोऊ शब्द समावा
बंक नाल की तोप चलाई । बिरह अगिन की चिनगी लाई ९
धर्मराय की फ़ौज भगाई । धूम धाम मैंने बहुत मचाई ॥ १० ॥
घंटा संख मृदंग बजाई । धौंसा धमक धजब धुन आई ॥ ११ ॥

गगन मंडल का घाटा रोका। काल मंडली खाया झोका ॥ १२ ॥
अब चढ़ गई सुरत शशि द्वारे। तीन लोक के होगई पारे॥ १३ ॥
भान किरन जह झलकन लागी। अगम रूप अद्भुत जहंपागी १४
खुली दृष्ट जब झिरना झांकी। क्या कहुं शोभा अब मैं वहांकी॥
कोटन भान रोम इक लागी। देख सुरत अचरज अस अस जागी
सुरत शब्द का होगया मेला। अगम पुर्ष अब रहा अकेला॥ १७
एक दोय कुछ कहा न जाई। ऐसे पद में जाय समाई ॥१८॥

आरत का मै यह फल पाया । दुक्ख भर्म सब दूर वहाया ॥ १९
परम शांत में आन समानी । क्या कहूं महिमां अचरज वानी २०
अब कीजे स्वामी पूरन किरपा । तन मन मैं सब तुम पर अरपा
राधास्वामी २ अब नित गाऊं । और वचन कुछ याद न लाऊं २२
देवो प्रसाद अगम पुर धामी । भक्ति सहित तुम चरन नमामी ॥

सा० नं० श० १२ (शब्द १८) सफा ७४८

उलट घट झांको गुरु प्यारी । नैन दोऊ तानो हो न्यारी ॥ १ ॥

देख नभ मंडल उजियारी। अनेकन चंद्र सूर तारी ॥२॥
खिली जह पच रंग फुसवारी। नदी जहं वहती इक भारी॥ ३ ॥
लाल और माणिक पन्नारी। झालरें मोती लख झारी ॥ ४ ॥
झिल मिली दामिन चमकारी। दमक जहं जोत लखी भारी॥५॥
सहस हल मध्य घन कारी। धुनन की होत झनकारी ॥ ६ ॥
सुना यह अनहद बाजारी। करे जहां माया सिंगारी ॥७॥
ठगे वहु जोगी मुनि भारी। टिके मत आगे चल प्यारी॥ ८ ॥

चढ़ो अब घाटी बंकारी। निरख सब त्रिकुटी लीलारी ॥ ९ ॥
गगन में परखो ओंकारी। गर्जे जस बादल गरजारी ॥१०॥
लाल जहं सूरज दरसारी। मृदंग और मुहचंग बज तारी ॥११॥
तख्त जहं शाही बिछ तारी। त्रिलोकी नाथ बैठारी ॥१२॥
जोगेश्वर ध्यान धारारी। परे इस सुद्ध गायारी ॥१३॥
व्यास यह मत चलायारी। संत उस तान मारारी ॥१४॥
राह बिच रहा अटकारी। संत घर उस न पायारी ॥ १५ ॥

राम और क्रश्ण औतारी । वशिष्ट और शंकराचारी ॥ १६ ॥
थके जहं शेष नारदरी । रहे जहं सनक सारद री ॥ १७ ॥
वेद भी नेत कहातारी । कंवल सुत विष्णु शिवहारी ॥ १८ ॥
साध संग सुन्न में आरी । संत जहं कहत दस द्वारी ॥ १९ ॥
अगम परकाश धुन न्यारी । रकार अक्षर परख सारी ॥ २०॥
महा सुन्न चल करो यारी । संत अब हुये अगुवारी ॥ २१ ॥
भंवर पर जा चढ़ी प्यारी । सुनी धुन बांसरी कारी ॥ २२ ॥

कदम वहां से उठायारी । सत्त पद यही पाया री ॥ २३ ॥
अलख और अगम धाया री । आरती राधास्वामी गायारी २४

सा० नं० श० १ (शब्द १९) सफा ७९

आरत गावे सेवक तेरा । संसे भरमने चित को घेरा ॥ १ ॥
अब स्वामी किरपा करो ऐसी ।
संसे जड़ सब जांय विनासी ॥ २ ॥
निरसंसे चित शब्द समाई । दसवें द्वार रहे ठहराई ॥ ३ ॥
आगे महासुन्न मैदाना । मौज होय तो करे पयाना ॥ ४ ॥

आगे भंवर गुफ़ा की खिड़की ।
सोहंग धुन जहां निस दिन लड़की ॥ ५ ॥
तहां जाय कर आनंद पाऊं । आगे को फिर सुरत चढ़ाऊं ६
सत्तनाम सत शब्द ठिकाना । चौथा पद सोई संत बखाना
हंसन सोभा कही न जाई । खोड़स चंद्र सूर छवि छाई ॥ ८ ॥
अद्भुत रूप पुरुष कहा बरनूं ।
कोटि सूर चंदा इक रोमूं ॥ ९ ॥

दीपन सोभा अजब संवारी । हंस २ प्रति दीप निरारी ॥१० ॥
अमीं कुंड जहां भर रहे भारी । पुर्ष दर्श का करें अहारी ॥
नित्त २ लीला नई जहां की । महिमां कहां लग वरनूं वहां की
अलख लोक तिस आगे थापा ।
गई सुरत तहां तज कर आपा ॥ १३ ॥
अलख पुर्ष सोभा कहा गाई । अरब कोटि शशि सूर लजाई
सुरत रूप वहां ऐसा पाई । कोटि भान छवि ऐसी गाई ॥१५ ॥

सुरत चली आगे पग धारा। अगम लोक को जाय निहारा
अगम पुर्ष की सोभा न्यारी। कोटिन खरब सूर उजियारी।१७
आगे ताके पुर्ष अनामी।ताको अकह अपार बखानी
संत बिना वहां और नजाई। संतन निज घर वह ठहराई ॥१९॥
हेस्वामी यह बिन्ती हमारी। भेद दिया तुम अति से भारी ॥२०
पहुंचुं कैसे सो भी गावो। मन मेरे को बहुत उमावो ॥२१॥
सुरत शब्द की राह बताई। दया बिना नहीं पहुंचे भाई ॥२२॥

संसै भरम न राखो कोई । धीरे २ सुरत समोई ॥२३॥
शब्द खोज तुम निस दिन राखो । वार २ स्वामी यह भाखो ।२४
अब आरत पूरण कह गाई । संत मता सब दिया लखाई ॥ २५ ॥

सा० नं० श०३ (शब्द २०) सफा ८७

नगरिया झांक रही मैं न्यारी । गुरू ने मोहि दीनी अचरज तारी
सुनी मैं अनहद धुन झनकारी । रूप अब निरखा अद्भुत भारी ॥
कहूं क्या गुरु की मेहर करारी । छुई मैं राधास्वामी चरण दुलारी

छोड़ कर देश पराया आई। महल में राधास्वामी आन बसाई
भेद यह दीन्हा मोहि मेरे भाई। कहूं कस महिमां उनकी गाई
सरन अब राधास्वामी दृढ कर पाई।
छोट मुख क्योंकर करूं बड़ाई॥ ६ ॥
भाग मेरा जागा शब्द सुहाई। नाम रस पाया करूं कमाई ७
सुरत हुई निरमलसुख मन पाई। चली और नभ पर करी चढ़ाई
नैन दोऊ फेरे जोत दिखाई। सहसदल कंवल मध्य धस आई

श्याम तज सेत रूप दरसाई। वंक चढ़ त्रिकुटी आन समाई
ऒंग धुन गर्ज भली समझाई। सूर जहां लाल २ दिखलाई ११
सुन्न चल मानसरोवर न्हाई। ररंग धुन किंगरी खूब सुनाई
हंस होय आगे पंथ चलाई। महासुन सूरत अजब सजाई
धमक सुन भंवर गुफ़ा ढ़िग आई। वांसरी सोहंग संग वजाई
वहां से सचखंड पहुंची धाई। पुर्ष का रूप अनोखा पाई १५
वीन धुन सुनकर वहुत रिझाई। मेहर हुई भारी कहा न जाई

१ गुरू मोंहि दीन्हा अलख लखाई। अगम का परदा खोलाजाई

वहां से राधास्वामी धाम दिखाई।

गई और चरण सरण लिपटाई ॥ १८ ॥

आरती अद्भुत लीन सजाई। बंगला अचरज रूप बनाई १९

बैठ कर राधास्वामी छवि दिखलाई।

उमंग और प्रेम रहा मेरा छाई ॥ २० ॥

सखी सब मिलकर देत वधाई। आज मेरा जन्म सुफल हुआ माई

ब्रह्म और माया दोऊ लजाई । काल और कर्म रहे मुरझाई
जोग और ज्ञान थके पछताई । कहूं क्या कोई मर्म न पाई २३
संत मत ठीक यही ठहराई । सुरत और शब्द राह दरसाई २४
वेद नाहिं पावे संत बड़ाई । कही अब राधास्वामी यह गत गाई

सा० नं० श० ५ (शब्द २१) सफ़ा ९३

सुख समूह अंतर घट छाया । आरत सामां आन सजाया ॥ १
आनंद हर्ख अधिक हिये आया । गुरु चरणन में चित्त समाया

दर्शन कर गुर महिमां गाया। छवि अनूप नैनन में लाया ॥३॥
प्रेम सूर निज गगन उगाया। भर्म तिमर सब दूर बहाया ॥४॥
जगे भाग धुन अनहद पाया। अंतर सुखमन तीरथ न्हाया ॥५॥
संहस कंवल तिल उलट फिराया। मन को छोड़ सुरत संग धाया
जोत निरंजन रूप दिखाया। अति हुलास कुछ कहा न जाया ॥७
घंटा नाद और संख सुनाया। चांद सूर तारा दरसाया ॥ ८ ॥
बंक नाल का द्वार खुलाया।। त्रिकुटी चढ़ गुरु शब्द मिलाया ॥९

सूरज मंडल वेद पढ़ाया । अर्ध मात्रा मूल जनाया ॥१०॥
सुन्न शिखर धुन ररंग जगायो । माया काल दोऊ सुलवाया॥११॥
सेत चंद्रमा फूल खिलाया । मान सरोवर अर्मी पिलाया ॥१२॥
हंसन साथ मिलाप बढ़ाया । किंगरी सारंगी धूम मचाया ॥१३॥
महा सुन्न धुन गुप्त लखाया । महा काल बल छीन कराया ॥१४॥
भंवर गुफा अमृत बरसाया । सोहंग वंशी नाद बजाया ॥ १५ ॥
चढ़ी सुरत सत पुर्ष गजाया । सच्च खंड जा तख्त बिछाया १६

पुर्ष मेहर दुर्बीन दिलाया। अलख रूप शोभा परखाया ॥१७

अगम पुर्ष फिर अमी चुवाया। राधास्वामी भेद बताया १८

भक्त धाम येही ठहराया। आरत कर राधास्वामी रिझाया १९

फल अपार दुख दूर गंवाया। रसक २ रस शब्द रसाया ॥२०

जन्म २ के कर्म नसाया। काल दाव अब खूब चुकाया ॥२१॥

राधास्वामी चरणन माथ निवाया।

राधास्वामी मूरत हिये बसाया ॥ २२॥

नाम पकड़ अब काम हटाया

तज विकार मन को समझाया । मन विहंग को अधर उड़ाया २४

सील क्षमा दृढ़ थान जमाया । राधास्वामी चरण निपट लिपटाया।

गुरु भृंगी यह कीट चिताया ।

सा० नं० श० १४ [शब्द २२] सफ़ा २५

एक आरती कहूं बनाई । राधास्वामी हुये सहाई ॥ १ ॥

शांत थाल और सत मत जोती ।

समता सील धरे जहां मोती ॥ २ ॥

रतनन माल परोई भाई । गल में स्वामी आन चढ़ाई ॥ ३ ॥
हीरे लाल थाल भर लाई । माणिक पन्ना भेट धराई ॥ ४ ॥
गहने कपड़े बहु पहनाई । चोवा चंदन अंग लगाई ॥ ५ ॥
अस २ सब सिंगार बनाई । कंवल देख ज्यों मधु कर आई
स्वामी सन्मुख ठाढ़ी भई । आरत थाली कर में लई ॥ ८ ॥
आरत कर २ अति हरखाई । राग रागनी नई २ गाई
बाजे बजे गगन के द्वार । उमंग बढ़ी सुन २ झनकार ॥ ९ ॥
अग्नि पवन और जल भंडार ।

तीनों पाये छोड़े वार ॥ १० ॥
इनके पार सुरत जब भई । चांद सूर तज सुखमन गही॥ ११
जोत निहारत मन हुलसाना ।
रूप निरंजन अलख पिछाना ॥ १२ ॥
घंटा नाद सुनी और पहुंची ।
संख नाद फिर सूरत खैंची ॥ १३ ॥
यहां से हटी बंक पट खोला । त्रिकुटी जाय आग धुन तोला

गर्जे २ आकाश पुकारी। आओ सुरत मैं तुझ परवारी ॥१५॥
लीला देखत चली अगाड़ी। सुन्न सरोवर कंवलन बाड़ी ॥१६
हंसन साथ महासुख पाई। महासुन्न में जाय समाई ॥१७॥
भंवर गुफा गई सोहंग पास।
मुरली धुन सुन करे विलास ॥ १८ ॥
यहां से चढ़ पहुंची सतपुर में।
सतगुरु पूरे मिले अधर में ॥ १९ ॥

नाना धुन सुन बीन बजाई । सत्तपुरुष दुरबीन लखाई ॥ २० ॥
द्वारे धस गई अलख लोक में ।
अगम लोक फल पाया छिन में ॥ २१ ॥
राधास्वामी पद दरसाना । क्या कहूं महिमां अजब ठिकाना
कहना था सो अब कह चुकी ।
आरत पूरण अब मैं करी ॥ २३ ॥
राधास्वामी हुये दयाल । दे परशादी किया निहाल २४

हीरे लाल निछावर करती ।
तन मन धन तो तुच्छ समझती ॥ २५ ॥

सा० नं० श० ६ (शब्द २३) सफ़ा १५७

गुरू की आरत ठानूंगी । गुरु कीं सरन सम्हारूंगी ॥ १ ॥
गुरू की महिमा गाऊंगी । गुरू के चरण पखारूंगी ॥ २ ॥
गुरू पर मनुवां वारूंगी । गुरू संग सदही धारूंगी ॥ ६ ॥
काल को छिन २ टारूंगी । कर्म को तुर्त पछाड़ूंगी ॥ ४ ॥

ध्यान गुरु हिरदे लाऊंगी रूप रस छिन २ पाऊंगी ॥ ५ ॥
वचन सुन नित्त कमाऊंगी । सुरत फिर गगन चढ़ाऊंगी ॥६॥
सुन्न चढ़ शब्द जगाऊंगी । नाद दस द्वार वजाऊंगी ॥ ७ ॥
सत पद जाय समाऊंगी । उलट फिर जग में आऊंगी ॥ ८ ॥
कुटंव को अपने लाऊंगी । गुरू के चरण लगाऊंगी ॥ ९ ॥
प्रीत की रीत सिखाऊंगी । आरती वहुत कराऊंगी ॥ १० ॥
पित्र पुरखा तराऊंगी । गया की धूर उड़ाऊंगी ॥ ११ ॥

भर्म सवही मिटाऊंगी । भटक सवही छुड़ाऊंगी ॥ १२ ॥
बुद्धि निरमल कराऊंगी । संत मत अव दृढाऊंगी ॥ १३ ॥
सुरत नैनन जमाऊंगी सहसदल कंवल आऊंगी ॥ १४ ॥
जोत दर्शन दिखाऊंगी । शब्द में जासमाऊंगी ॥ १५ ॥
वंक द्वारा खुलाऊंगी । तिरकुटी जा पिठाऊंगी ॥ १६ ॥
मानसर चढ़ अन्हाऊंगी । सारंगी धुन सुनाऊंगी ॥ १७ ॥
महासुन्न पार पाऊंगी । गुफ़ा धुन सर लगाऊंगी ॥ १८ ॥

सोहंग वंसी सुनाऊंगी । गैव धुन भेद गाऊंगी ॥ १९ ॥
सत की राह धाऊंगी । नाम पद फिर जनाऊंगी ॥ २० ॥
दूर दुरबीन लगाऊंगी । अलख को जा लखाऊंगी ॥ २१ ॥
अगम गढ़ चढ़ दिखाऊंगी । भेद वहां का छिपाऊंगी ॥ २२ ॥
आरती अब सजाऊंगी । प्रेम अपना बढ़ाऊंगी ॥ २३ ॥
सुरत जोती चिताऊंगी । थाल भक्ती धराऊंगी ॥ २४ ॥
आरती राधास्वामी गाऊंगी । परम पद आज पाऊंगी ॥ २५ ॥

सा० नं० श० १२ [शब्द २४] सफ़ा १७४

गुरु चरण बसे अब मन में । मैं सेऊं दम २ तन में ॥ १ ॥
फिर प्रीत लगी घट धुन में । चढ़ पहुंची पहिली सुन में ॥ २ ॥
अब सील क्षमा मन छाई । गई तपन काम दुखहाई ॥ ३ ॥
फिर क्रोध लोभ भी भागे । अहंकार मोह सब त्यागे ॥ ४ ॥
धुन पांच शब्द घट जागी । मन हुआ सहज वैरागी ॥ ५ ॥
गुरु किरपा सूर उगाना । अब हुआ जक्त बेगाना ॥ ६ ॥

घट बैठी तारी लाई । बाहर की किरिया दूर बहाई ॥ ७ ॥
गुरु अद्भुत सुख दिखलाया । क्या महिमां जाय न गाया ॥८॥
जग जीव अभागी सारे । नर देही योंही हारे ॥ ९ ॥
क्यों गुरु से प्रीत न करते । क्यों जम के किंकर रहते ॥१०॥
मैं किससे कहूं सुनाई । फिर अपना मन समझाई ॥ ११ ॥
तू गुरु मत दृढ़ कर भाई । अब छोड़ो तात पराई ॥ १२ ॥
चलरह तू त्रिकुटी घाटी । चढ़ सुन्न सिखर की चाटी ॥ १३ ॥

महासुन्न की तोड़ी टाटी। जा भंवर गुफा की हाटी ॥ १४ ॥
फिर सत्तपुर्ष घर पाया। धुन बीना जाय बजाया ॥ १५ ॥
सुनी अलख अगम की बतियां। शसि सूर खरब जहां थकियां
पिया परसे राधास्वामी। कुछ कहुं ना पुर्ष अनामी ॥ १७ ॥
मेरी आरत सब से न्यारी। कोई समझेगी पिया प्यारी ॥१८॥
यह भेद अथाह बखाना। बिन संत न कोई जाना ॥ १९ ॥
करमी जिव जग के अंधे। सब फंसे काल के फंदे ॥ २० ॥

उनसे नहीं कहना चाहिये । मत गूढ़ छिपाये रहिये ॥ २ ॥
सुर्त शब्द कमाई करना । सुमरन में तन मन देना ॥ २२ ॥
गुरु दर्शन बहुत निरखना । धुन अनहद नित्त परखना ॥२३॥
सतसंग की चाहत रखना । जब डौल बने तब करना ॥ २४ ॥
उपदेश किया यह टीका । राधास्वामी नाम में सीखा ॥ २५ ॥

सा० नं० श० १३ (शब्द २५) सफ़ा ६८१

आओरी सिमट हे सखियो । मैं आरत करूं गुरु की ॥ १ ॥

तुम जुड़ मिल बैठो गावो । मैं आरत करूं गुरू की ॥ २ ॥
तुम अपने संग लगालो । मैं आरत करूं गुरू की ॥ ३ ॥
तुम प्रेम बढ़ा दो मेरा । मैं आरत करूं गुरू की ॥ ४ ॥
तुम करो मदद मेरी मिलकर । मैं आरत करूं गुरू की ॥ ५ ॥
तुम बिन मेरे बल नहिं पौरुष । मैं आरत करूं गुरू की ॥ ६ ॥
तुम सेवक सांचे गुरु की । मैं आरत करूं गुरू की ॥ ७
अब बिन्ती सुनो अधम की । मैं आरत करूं गुरुकी ॥ ८ ॥

तुम ढंग सिखाओ रंग से । मैं आरत० ॥ ९ ॥
यह औसर मिले न कबही । मैं आरत० ॥ १० ॥
अस औसर फिर न मिलेगा । मैं आरत० ॥ ११ ॥
मन बिरह जोत अब बाली मैं आरत० ॥ १२ ॥
कर उमंग थाल ले आई । मैं आरत० ॥ १३ ॥
सामां सब हुई इकट्ठी । मैं आरत० ॥ १४ ॥
श्रत श्याम कंज चढ़ झांकी । मैं आरत० ॥ १५ ॥

फिर बंक नाल धस आई । मैं आरत० ॥ १६ ॥
त्रिकुटी की सिला हटाई । मैं आरत० ॥ १७ ॥
सुन सेत हंस गति पाई । मैं आरत करूं० ॥ १८ ॥
महासुन्न निरखती चाली । मैं आरत० ॥ १९ ॥
मुरली धुन गुफ़ा सम्हाली । मैं आरत० ॥ २० ॥
सचखंड बीन धुन जागी । मैं आरत० ॥ २१ ॥
लख अलख पुर्प पद पागी । मैं आरत० ॥ २२ ॥

अब अगम गम्मकर आई । मैं आरत० ॥ २३ ॥
राधास्वामी धाम दिखाई । मैं आरत० ॥ २४ ॥
राधास्वामी सतगुर पूरे । मैं आरत० ॥ २५ ॥

सा० नं० श० १४ (शब्द २६) सफ़ा ७५२

घट चमन खिला उजियारी । गुर ज्ञान मिला अब भारी ॥ १ ॥
श्रुत नदी चली धधकारी । पहुंची जाय सिंध सम्हारी ॥ २ ॥
धुन अनहद निरख निहारी । घंटा जहं संख बजारी ॥३॥

मन पाहिरा द्वार लगारी । तस्कर सब दूर निकारी ॥४॥
दे सील क्षमा की वाड़ी । सत की फुलवार खिलारी ॥ ५ ॥
धीरज का कूप खुदारी । जल प्रेम सींच रही क्यारी ॥ ६ ॥
मक्ती रस प्रीत पियारी । चढ़ गगन गैब फल खारी ॥ ७ ॥
दल कंवल सहस फुलवारी । पचरंगी रंग बहारी ॥ ८ ॥
नौबत जहं बजती न्यारी । खुल खेली सुरत हमारी ॥ ९ ॥
सुन में चढ़ धुन लई सारी । किंगरी गति अगम बिचारी ॥१०॥

गई महासुन्न पद पारी । जहं बंसी बजत करारी ॥ ११ ॥
सतनाम मिला पद चारी । गति अलख अगम घर धारी ॥१२
राधास्वामी चरण सम्हारी । पाई गति आज अपारी ॥ १३ ॥
कर आरत हुई गुरु प्यारी । घर अजर अमर पाधारी ॥ १४ ॥
सुत मारग दूर चलारी । हद बेहद पार सिधारी ॥ १५ ॥
ज्ञानी थक जोग थकारी । श्रुत स्मृत पार न पारी ॥ १६ ॥
संतन मत ऊंच निकारी । मानो जिन भाग बड़ारी ॥ १७ ॥

व्रत तीर्थ जरूर पचारी । जप तप में वृथा खपारी ॥ १८ ॥
विद्या पढ़ मान अहारी । तिरपत नहीं बुद्धि विगाड़ी ॥ १९ ॥
भक्ती और प्रेम गया री । दासातन अब न रहा री ॥ २० ॥
घट में क्यों जाय चढ़ा री । मन हुआ सुतंतर भारी ॥ २१ ॥
मन मुखता अजय संवारी । गुरु मुखता दूर निकारी ॥ २२ ॥
राधास्वामी कहत पुकारी । हे सतगुरु लेवो सम्हारी ॥ २३ ॥
इनसे मोहिं लेवो बचारी । यह रूखे प्रेम न धारी ॥ २४ ॥

मैं राधास्वामी सरन पड़ारी । तुम रक्षा करो हमारी ॥ २५ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ३ (शब्द २७) सफा १२५

दरश गुरु उठत बिरह भारी । तजत मन करनी संसारी ॥१॥

भोग जग दीखत रोग समान ।

जोग गुरु भक्ती चित्त बसान ॥ २ ॥

निरख माया का रंग मैला । चित्त चाहत सतसंग सैला ॥३॥

चरन गुरु बढ़त नया अनुराग ।

दई सब आसा जग का त्याग ॥ ४ ॥
जिगर में तपन उठत दिन रात।
रहूं अब कैसे चरनन साथ ॥ ५ ॥
खान और पान नहीं भावे। चरन में मन छिन २ धावे ॥६॥
संग जग जीव सुहावत नाहिं। दरस गुरु चाह बढ़त मन माहिं
जगत से रहता चित्त उदास। चरन में चाहत छिन २ बास८
परख मन इंद्री चाल कुचाल।

काल और करम भरम का जाल ॥ ९ ॥
करत रहूं विन्ती दिन और रात ।
बचाओ देकर अपना हाथ ॥ १० ॥
स्वामी मेरे प्यारे पित और मात ।
जाय नाहिं महिमा उनकी गात ॥ ११ ॥
करें मेरी छिन २ आप सम्हार ।
सरन में राखें देकर प्यार ॥ १२ ॥

चरन मेरे हिरदे में धारें।
दयाकर दुरमत सब टारें ॥ १३ ॥
भजन और भक्ति नहीं बनिआय।
ध्यान और सुमिरन दिया बिसराय ॥ १४ ॥
किया मैं चरनन में बिस्वास। कर गुरु पूरन मेरी आस ॥१५॥
जतन कोई करे चाहे जितने। दया बिन काज नहीं सुपने १
सुरत मन जूझत धु॰ के संग। मेहर बिन नहीं लागे गुरु रंग

प्रेम गुरु जब मन में आवे। सुरत मन तब धुन को पावे १८
मेहर से खैंचें जब सूरत। लखे तब हिये में गुरु मूरत ॥१९॥
गगन में घंटा शंख सुने। नाल चढ़ मिरदंग गरज गुने
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय। गुफ़ा में बंसी लई बजाय ॥२१
बहुर सतपुर में पावे बास। बीन धुन बाजत जहां निस बास
अलख और अगम का देखा रूप।
परस कर चरन पुरुष कुल भूप॥ २३ ॥

दरश राधास्वामी पाऊं सार। जाऊं राधास्वामी पर बलिहार
आरती गाऊं हित चित लाय। चरन राधास्वामी हिये बसाय

प्रे० बा० १ न० श० ६ (शब्द २८) सफ़ा ३१७

हुई मोहि गुरु चरनन परतीत। लगी मेरी छिन २ उनसे प्रीत
जगत की झूठी है सब रीत। चकूं मैं काल करम दल जीत
गुरू ने मोपै किन्ही दया अपार। सरन दे भेद बताया सार ३
छुटाया मुझसे जगत असार। लिया मोहिं अपनी गोद बिठार

जिऊं मैं नित परशादी खाय। चरन में अमृत पिऊं अघाय ५
करूं मैं सेवा उमंग २। रहूं नित राधास्वामी चरनन संग ॥६॥
सुरत में धरूं शब्द की प्रीत।
धुनन संग जोड़ूं निस दिन चीत ॥ ७ ॥
बिछाये मन ने जग में जार। जीव को करती इंद्री ख्वार ॥८॥
जगत में माया डाला शोर। गिरे बहु जोगी मुनकर जोर ॥९॥
संग सत गुरु का कोइ नहिं पाय। गए सब जम के हाथ बिकाय

सराहूं कस २ भाग अपना । किया राधास्वामी मोहि अपना
दयाका बल कीन्हा मेरे साथ । नाम का साटा दीना हाथ १२
करूं मैं मन इंद्री को चूर । प्रेम गुरु रहा हिये भरपूर ॥ १३ ॥
काल का धुर से काटूं जाल । करूं मैं माया को पामाल ॥१४॥
चरन गुरु राखूं हिरदे धार । सरन पर जाऊं नित बलिहार १५
सजाऊं आरत रंगा रंग । हिये में बढ़ती आज उमंग ॥ १६ ॥
मेघ की बाती लेउं बनाय । शब्द धुन जोत जगाऊं आय १७

हरख मन आरत गाऊं आज । दिया राधास्वामी अद्भुत साज
अमीं का भोग रखूं भरथाल । हुए राधास्वामी आज दयाल
शब्द धुन बाजी नभ की ओर । सहसदल परदा डाला तोड़
गगन में उठी शब्द की गाज । सुरत गइ त्रिकुटी पाया राज
सुन्न में धूम पड़ी भारी । सुनी धुन सारंगी सारी ॥ २२ ॥
भंवर चढ़ मुरली लई बजाय । गई सतपुर में बीन सुनाय २३
अलख और अगम को निरखा जाय । दरस राधास्वामी पाया आय

आरती पूरन कीनी आय । दया राधास्वामी छिन २ पाय २५

प्रे० बा० १ नं श० ९ (शब्द २९) सफा ३२६

चरन गुरु बढ़त हिये अनुराग । बासना जग की दीन्ही त्याग
गुरू मोहिं दीन्हा परम सुहाग । सुरत रही छिन २ धुन रस लाग
दया मोपै बिन मांगे अस कीन । दरश मोहिं घट में निस दिन दीन
कहूं क्या महिमा राधास्वामि गाय ।
सुरत मेरी चरनन लीन लगाय ॥ ४ ॥

पड़ीथी निरमल भव के कूप। दिखाया मुझको अचरज रूप
चढ़ाया मुझको नभ के पार। दिखाई घट में अजब वहार ॥६॥
रहे मन इंद्री थक कर वार। सहज में पाया गुरु दीदार ।७।
छुड़ाए मन के सभी विकार। करम मेरे काटे सबही झाड़ ।८।
कहूं कस महिमां दया अपार। लिया मोहिं अपनी गोद बिठार
नहीं कोइ करनी मैंने कीन। नहीं कोई सेवा मुझ से लीन १०
नहीं कोइ वचन सुने में आय। नहीं मैं दरशन सन्मुख पाय

कुटंब संग घर में रही लिपटाय। वहीं सोंपे किरपा करी बनाय
सुरत रहे निस दिन रस माती। दरश नित हिये अंतर पाती
शब्द संग करती नित्त विलास। देखती घट में अजब उजास
तड़प हिये उठती बारंबार। करूं मैं सतसंग गुरु दरबार १५
चरन में बिनती करूं बनाय। देव मोहिं दरशन पास बुलाय
करूं मैं आरत सन्मुख आय। शुकर कर चरनन माथ नवाय
करो मेरी अभिलाखा पूरी। रहूं संग कोई दिन तज दूरी १८

गाऊं सतसंग का परम विलास। शब्द का देखूं वह परकाश
सुरत तब चढ़े गगन पर धाय। जोत लख गुरु पद परसे जाय
सुन्न में तिरबेनी न्हावे। गुफा चढ़ मुरली धुन पावे॥ २१॥
सुने धुन बीना सतपुर आय। अलख लख अगम का दरशन पाय
चरन राधास्वामी कर दीदार। रहूं में दम २ चरन अधार २२
दया बिन नहीं पावे यह धाम। चढ़े नहिं बिन डोरी निज नाम
मेहर कर राधास्वामी दिया बिसराम

सरन म उनके रहूं मुदाम ॥ २५ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० १६ [शब्द ३०] सफा ३४७

विमल चित गुरु चरनन लागा । दास घट बाढ़ा अनुरागा १
ढूंढता बहुत फिरा जग में । भटक गए सब जीव या मग में २
बोलते मुख से ऊंचो बात । परख नहिं पाई सतगुरु साथ ३
संत का मरम नहीं जानां
ग्रंथ पढ़ २ हुए दीवाना ॥ ४ ॥

खोजता आया राधास्वामी पास। दरश कर हियरे बढ़त हुलास
वचन सुन आई मन परतीत। चरन में गुरु के धारी प्रीत॥६॥
भेद सत संग का मोहिं दीना। सुरत हुई धुन में लौलीना॥७॥
मेहर राधास्वामी पाई आय। दिया मेरा सोता भाग जगाय॥८॥
गुरू की महिमां अब जानी। नाम धुन सुन हुई मस्तानी॥९॥
सुरत रस शब्द लेत दिन रात। स्वामी की महिमां निस दिन गात
संत के कस २ गुन गाऊं। चरन पर नित २ बल जाऊं॥११॥

शब्द की गहिरी लागी चोट। गही जब सत गुरु की मैं ओट ॥१२॥
रहे मन इंद्री थक कर वार। काल और करम रहे झख मार
गुरु ने पकड़ी मेरी बांह। बिठाया निज चरनन की छांह १४
अंधेरा छाय रहा संसार। भेख और पंडित भरमें वार ॥१५॥
जीव सब भूले उनके संग। हुए सब मैले माया रंग ॥ १६ ॥
कहूं मैं उनको अब समझाय। सरन लो सतगुरु की तुम आय
जीव का अपने करलो काज। नहिं फिर जमपुरु आवे लाज

नाहिं कुछ तीरथ में मिलना । चित्त नाहिं मूरत में धरना ॥१९॥
चरन राधास्वामी परसो आय । सहज में सुरत निज घर जाग
उमंग मेरे मन में उठती आज । करूं राधास्वामी आरत साज
प्रेम संग गुरु अस्तुत गाती । मेहर राधास्वामी छिन २ पाती
जोत का दरशन नभ पाती । गरज सुन सुरत गगन जाती २३
सुन्न में तिरवेनी न्हाती । गुफ़ा चढ़ मुरली बजवाती ॥ २४ ॥
सत्त और अलख अगम पारा । चरन राधास्वामी परसाती ५२

प्रे० बा० १ नं० श० ३३ (शब्द ३१) सफ़ा ३०३

हुई मन राधास्वामी की परतीत ।
गही मन सुरत शब्द की रीत ॥ १ ॥
वचन सुन मन में आई शांत ।
शब्द की निरखी घट में क्रांत ॥ २ ॥
धरे थे मन में भरम अनेक । बसे बहु धरम करम कुल टेक ३
बुद्धि से करता मत की तोल । मिला नहीं खाय बहु झकझोल

भाग से मिला गुरू का संग।
मेहर हुई लागा घट गुरु रंग ॥ ५ ॥
हुए सब संशय मन के दूर। परखिया घट में राधास्वामी नूर
जगत का परमारथ त्यागा। मगन मन सुरत शब्द लागा
प्रेम संग नित करता अभ्यास।
हुआ राधास्वामी चरनन विस्वास ॥ ८ ॥
प्रीत घट अंतर लाग रही। शब्द संग सुरत जाग रही ॥२॥

शब्द गुरु प्रेम बढ़त दिन रात।
करत नित माया के उत्पात ॥ १० ॥
कठिन मन डालत भारी झोल।
दिखावत माया नए नए चोल ॥ ११ ॥
गुरू बल काटूं मन का जाल। तोड़ देउं माया का जंजाल १२
गुरू मेरे राधास्वामी पुरुप अपार।
दया निधि समरथ कुल दातार ॥ १३ ॥

मेहर से लिया मोहिं अपनाय ।
दिया मेरा अचरज भाग जगाय ॥ १४ ॥
सरज दे पूरा कीना काम । भजूं मैं छिन २ राधास्वामी नाम १५
सुरत मन चढ़ते धुन के संग । सहसदल बजते घंटा संख १६
गगन धुन मिरदंग गरज सुनाय ।
ररंग धुन सारंगी संग गाय ॥ १७ ॥
गुफ़ा में मुरली उठ बोली । सतपुर धुन बीना तोली ॥१८॥

अलख लख गई अगम के पार ।
अनामी पुरुष किया दीदार ॥ १९ ॥
करी वहां आरत प्रेम सम्हार । रही में अचरज रूप निहार२०
दया मोपै राधास्वामी कीनी पूर ।
मिला मोहिं आनंद बाजे तूर ॥ २१ ॥
दिया मोहिं राधास्वामी शब्द अधार ।
हुई मैं तनमन से बलिहार ॥ २२ ॥

मेहर से तारा कुल परवार। गुरू मेरे प्यारे परम उदार ॥२३।
शब्द की महिमां अगम अपार । शब्द बिन होय न जीव उधार
परम गुरु राधास्वामी पुरुष अनाम ।
दिया मोहिं निज चरनन बिसराम ॥ २५ ॥

प्रे० १ नं० श० ६९ (शब्द ३२) सफ़ा ४७९

सुनत गुरू महिमां जागी प्रीत। छोड़ दई मन ने जग की रीत ॥१॥
भजत गुरु नाम मिला आनंद। सुनत गुरु शब्द कटे भौ फंद ॥२॥

भटक में बहु दिन गये बीते । बस्तु नाहिं पाये रहे रीते ॥३॥
भेष और पंडित डाला जाल । छुप सब माया संग पामाल ॥४॥
भरम रहे आप अंधेरे माहिं । अटक रहे काल करम की छांह ॥५॥
पुजावें सब से नीर पखान । न पाई सत पद की पहिचान ॥६॥
भरमत सब जिव चौरासी । कटैं नहिं कबही जम फांसी ॥७॥
घटाया उन संग भाग अपना । सहें नित करमन संग तपना ।८।
हुई मोपे अचरज दया अपार ।

लिया मोहिं राधास्वामी आप निकार॥ ९ ॥

भेद निज घर का समझाया । शब्द का मारग दरसाया ॥ १० ॥

सुनाये बचन गहिर गंभीर । छुटाई तन मन की अब पीर ॥ ११ ॥

करम और भरम दिये छुटकाय । भक्ति गुरु दीनी हिये बसाय ।

चरन में गुरु के बढ़ती प्रीत । धार लई मन ने भक्ती रीत ॥ १३ ॥

सुरत मन अटके गुरु चरना । गावती छिन २ गुरु महिमां ॥ १४ ॥

सरन गुरु लागी अब प्यारी । उतर गई पोट करम भारी ॥ १५ ॥

करूं गुरु आरत चित्त सम्हार।
चरन पर राधास्वामी जाऊं बलिहार॥ १६॥
हुआ मेरे चित में दृढ़ विस्वास। करैं गुरु पूरन मेरी आस॥ १७॥
दया कर देहैं चरन में वास। करूं मैं उन संग नित्त बिलास॥
परम गुरु राधास्वामी किरपा धार। सरन दे मोहि उतारा पार॥
सहस दल देखूं जोत सरूप। निरखती त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप॥
सुन्न में सुनती सारंग सार। भंवर में मुरली धुन झनकार॥

सत्तपुर पंहुची लगन सुधार। पुरुष का दरशन किया सम्हार ॥
गई फिर अलख अगम के धाम। परम गुरु मिले अरूप अनाम ॥
आरती उन चरनन में धार। लिया मैं अपना जनम सुधार २८
मेहर राधास्वामी बरनी नजाय दिया मोहिं सहजहिं पार लगाय

प्रे० बा० १ [शब्द ३३] सफा ५०२

सरन गुरु महिमां चित्त बसाय। सुरत मन निस दिन चरनन धाय
चरन गुरु दृढ़ परतीत सम्हार। प्रीत हिये बढ़ती दिन२ सार

चरन राधास्वामी आसा धार। जिऊं मैं निसदिन चरन अधार
हिये में राधास्वामी बल धारू। दया ले काल करम जारूं ४
भरोसा राधास्वामी हिरदे धार। मौज गुरु हरदम रहूं निहार
निरख कर चलती मन की चाल। परख कर काटूं माया जाल
सहज में छोड़ू क्रोध और काम।
जपूं नित हिये में राधास्वामी नाम॥ ७॥
लोभ और मोह बिसार दई। अहंग तज छोड़ी मान मई ॥८

दयाराधास्वामी लेकर साथ । काल और मन का कूटूं माथ
परख कर पकडूं गुरु बचना । चाल मन माया नित तजना
डरत रहूं सतगुरु से हरदम । चरन में राखूं चित कर सम
गुरु की आज्ञा सिरपर धार । चलूं नित बचन बिचार२ ॥१ ॥
गाऊं उन महिमा दिन और रात । करूं उन सेवा तन मन साथ
शुकर कर हिरदे से हरबार । चरन पर जाऊं नित बलिहार
उमंग कर नित आरत करती । प्रेम राधास्वामी हिये भरती

पिरेमीजन संग गाऊं राग। बढ़त मेरे दिन २ हिये अनुराग ॥१६

मेहर राधास्वामी छिन २ पाय। ध्यान गुरु चरनन रहूं समाय

शब्द धुन बजती नभ की ओर।

गगन चढ़ गई रैन हुआ भोर ॥ १८ ॥

चांदनी खिली सुन्न के माहिं।

भंवर चढ़ मिटी काल की दांय ॥ १९ ॥

सुनी धुन बीना सतपुर जाय ।

मगन हुई दर्शन सतपुर्ष पाय ॥२७॥

अलख चढ़ अगम से कीना प्यार। अनामी पुरुष किया दीदार

परख कर सुरत शब्द निज धार।

करूं गुरु आरत जाऊं वलिहार ॥२८

दया राधास्वामी कीनी अपार। हुई मस्तानी रूप निहार ॥०३०

वेद नहीं जाने यह घर वार। रहे सब जोगी ज्ञानी वार॥२७

दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय।

मगन हुई मैं यह निज घर पाय ॥२५॥

प्रे० वा० २ नं० श० २२ (शब्द ३४) सफ़ा ४१

सुरत गत निर्मल बुंद सरूप । सिंध तज आई भौके कूप ॥ १ ॥
दयाल घर करती नित्त निवास । जगत में आय किया तन वास
भरम रही इंद्रिन संग नौवार । दुक्ख सुख भोगत मन के लार
देख जग जीवन हालत जार । दयाकर राधास्वामी परम उदार
जगत में आये धर औतार । हंस जीवन को लिया उबार ॥ ५ ॥

भक्ति गुरु रीत समझाई । काल मत भेद भिन्न गाई ॥ ६ ॥
सुरत और शब्द किया उपेदश । सुनाई महिमां संतन देश ॥ ७
वचन उन जिन हित से माना । दिया उन प्रेम भक्ति दाना ॥८॥
कालके फंदे दिये खुलाय । जाल माया का दिया कटाय ॥ ९ ॥
पुर्प का दामन दिया पकड़ाय । शब्द से पौड़ी शब्द चढ़ाय ॥१०
सुरत मन अस २ अधर चढ़ाय ।
मेहर कर दिया निज घर पहुंचाय ॥ ११ ॥

प्रेम की मुझ को दे कर दात
कराई भक्ती दिन और रात ॥१२॥
सिखाई नई २ भक्ती रीत। धरे मेरे हिरदे दृढ़ परतीत ॥१३॥
धूम गुरु भक्ती हुई भारी। जगत जिव कोटिन लिए तारी ॥१४॥
वढ़ावत दिन २ अचरज भाग। वसाया हिये में विरह अनुराग
सुरत मन चढ़त अधर की गैल। मगन होय करते घट में सैल
फोड़ नभ त्रिकुटी को आवत। निरख गुरु मूरत हरखावत ॥१७

मान सर किये अज्ञान सम्हार। भंवर चढ़ खोली खिड़की पार
चौंक लख दरश पुरुष का कीन। सुनी वहां मधुर २ धुन बीन॥
अलख और अगम दया धारी। अनामी धाम लखा सारी॥२०॥
यहीं से उतरी सूरत धार। उलट फिर आई चरन सम्हार॥२॥
अनेक विधि जग जीवन का काज। संवारा देकर भक्ती साज
किया यह राधास्वामी आपही काम।मेहरसे दिया चरनन विसराम
गाऊं कस राधास्वामी गत भारी। कहत रही रचना थक सारी

करूं उन आरत हित धर चित्त । चरन में राधास्वामी खेलूं नित्त

प्रे०बा० २ नं० श० १३८ (शब्द ३५) सफ़ा ४०७

सुरतिया समझ गई । अब राधास्वामी मत निजसार ॥१॥

चित से चेत किया गुरु सत संग ।

शब्द का जाना भेद अपार ॥ २ ॥

आदि धाम से जो धुन आई । वही हुई सब की करतार ॥३॥

सब रचना की जान वही है । वही नूर और प्रेम की धार ॥४॥

जहां २ यह धारा ठहरी । मंडल बांध करी रचन नियार ५
शब्द रची तिरलोकी सारी । शब्द से फैली माया झार ६
पांचों तत्त और गुन तीनों । शब्द रची सब रचन सम्हार ७
धुन का नाम आतमा होई । शब्द रूप तू सुरत विचार ॥८॥
मन माया संग हुई मलीना । इंद्रियन संग भरमी संसार ९
काम क्रोध वस दुख सुख भोगे । त्रिय तापन संग हुई बीमार ॥१०॥
जब लग मिलें न गुरु घुर धामी ।

फंसी रहे रह काल के जार ॥ ११ ॥
शब्द भेद दे पंथ लखावें । घट में परखावें धुन धार ॥ १२ ॥
राधास्वामी परम पुरुष निज शामी ।
महिमां उनकी अगम अपार ॥ १३ ॥
सुन २ सुरत मगन होय मन में । प्रीत लाय परतीत सम्हार
धुन की डोरी पकड़ अधर में ।
मन और सुरत चढ़े धर प्यार ॥ १५ ॥

सतगुर संग बांध जुग चालें । काल कर्म से होवें न्यार ॥१६॥
सुन में जाय मानसर न्हावें । मन का संग तज सूरत सार१७
महासुन्न और भंवर गुफ़ा चढ़ । पहुंच गई सतगुरु दरबार ॥
अलख अगम की धून सुन पाई ।
राधास्वामी रूप लखा निजसार ॥ १८ ॥
सत गुरु दया काज हुआ पूरा ।
सहज मिला मोंहि निज घर बार ॥ २० ॥

राधास्वामी मत की महिमा भारी ।
काल देश से जीव निकार ॥ २१ ॥
अमर धाम पहुंचावें सतगुरु । तब होवे सच्चा निरवार
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
तब भेटैं सतगुर सच यार ॥ २३ ॥
दया मेंहर से जीव उबारें । सहज मिलावें सत करतार २४
राधास्वामी गुन मैं छिन २ गाऊं । शुकर करूं उन बारंबार२५

प्रे० वा० २ नं श० ७ (शब्द ३६) सफ़ा ४२२

आज तजो सुरत निज मन का मान ॥ टेक ॥

इसी मान ने जग भर माया । यही मान करे सबही हान ॥१॥

अहंग बुद्ध परदा है भारी । निज सरूप गुरु कभी न दिखान

मान मनी जिस घट में भरिया । हिये नैन वाके कभी न खुलान

याते सब को ऐसा चाहिये । अपनी कसर नित निरखें आन

दीन होय गिर सतगुरु चरना । अपने को जानो अनजान ५

तव सतगुरु और साध दया कर । भेद सुनावें अधर ठिकान
प्रीत सहित उन सतसंग करना । रहनी उन अनुसार रहान
सुन उन वचन भाव जग त्यागो । सुरत शब्द का गहो निशान
दास अंग ले सेवा करना । ताड़ मार उन सहो निदान ॥९॥
काम क्रोध को मन से तजना । सील क्षिमा चित मांहि वसान
जो कोई वचन कहे तोहि कड़ुवा । और कोई तान और दोष लगान
नीच निकाम समझ आपे को । तौभी उन से मन न फिरान

कोई वात से मन नहिं उलटे। गुरु को नित तू गुरु ही जान
भय और भाव सदा उन राखो। वचन सुनो उन चित से आन
वचन अनुसार करो तुम करनी। गहनी रहनी संग मिलान
अस २ भाव लाय जो गुरु से। उसको दें अपनी पहिचान १६
उमंग २ करें सेवा निस दिन। हरख २ करें दरशन आन १७
दिन २ जागे प्रीत नवीना। धर परतीत करे उन ध्यान ॥१८॥
दीन होय मन वस में आवे। शब्द माँहिं तब सुरत समान १९

प्रेम धार नित घट में जारी। दिन २ अनुभव सहज जगान २०
रहन गहन गुरु मुख की गाई। गुरुमुख होय सो ले पहिचान
राधास्वामी मेहर रहे नित संगा। सहज २ पट अधर खुलान
जोत निरख पहुचे गगनापुरु। सुन्न परे मुरली सुन तान ॥२३॥
सत्त नूर सतपुर जाय निरखै। अलख अगम के महल बसाय
वहां से धुर घर पहुंचे छिन में। राधास्वामी चरन परस मगनान

प्रे० बा० ४ नं० श० ७५ (शब्द ३७)

पिरमी सुरत रंगीली आय दिया सतसंग में प्रेम जगाय ॥१॥
दरस गुरु पाय मगन होती। वचन सुन मल हिये से धोती
बढ़ावत सतसंगियन से प्रीत। पकावत हिये में गुरु परतीत
हरखती निरखत गुरु सजना। फड़कती गावत गुरु वचना ॥४
गुरु की सोभा निरख निहार। मगन होय डारत तन मन वार
भाव नित नया २ दिखलाती। गुरु की छवि पर बल जाती
लगा अब रूखा जग व्यौहार। मिला परमारथ सार का सार

प्रेम का किनका गुरु दीना । सुरत रहे चरनन लौलीना ॥ ८ ॥
विनय करूं राधास्वामी चरनन में । प्रीत रहे यादृत दिन २ में
मिले नित घट में रस आनंद । कटें सब काल करम के फंद १०
सुरत रहे चरनन में लागी । रहे मन निस दिन अनुरागी ११
हुये परशन्न राधास्वामी दयाल । मेहर से कीना मोहिं निहाल
उमंग कर आरत सामांलाय । धरे सब गुरु के सन्मुख आय
चमक और दमक के वस्तर लाय ।

मगन होय गुरु को दिये पहिनाय ॥ १४ ॥
निरख छवि हरख हुआ भारी। दया पर छिन २ बलिहारी १५
आरती गाई उमंग २। सुरत मन रंगे प्रेम के रंग ॥ १६ ॥
हंस सब झुड़ मिल नाच रहे। मधुर धुन बाजे बाज रहे १७॥
हुई सतसंग में भारी धूम। नाचरहे सब मिल झूम और घूम
प्रेम की बरखा चहुं दिस होय। सुरत रही सब की चरन समोय
सुद्धि बुद्धि देह बिसार रहे। गुरू पर तन मन वार रहे

सुरत मन उमंग अधर चढ़ते । गगन में गुरु दर्शन करते २१
अजब यह औसर आया हाथ । सुरत मन नाचत गुरु के साथ
सुन्न और महासुन्न के पार । सुरत गई सतपुरुष दरबार २३॥
अलख और अगम के पार ठिकान ।
चरन राधास्वमी परसे आन ॥ २४ ॥
दया राधास्वमी की भारी । हुये सब प्रेमी सुखियारी ॥ २५ ॥

सा० नं० श ४ (शब्द ३८) सफ़ा १०४

आज साजकर आरत लाई । प्रेम नगर विच फिरी है दुहाई १
बिरह बिथा के छुटगये डेरे । मिल गये राधास्वामी बिछडे मेरे
हिरदा थाल सुरत की बाती ।
शब्द जोत में नित्त जगाती ॥ ३ ॥
आरत फेरूं सन्मुख ठाड़ी । प्रीत उमंग मेरी छिन २ बाढ़ी ४
तन नगरी बिच बजत ढंढोरा ।
भागे चोर ज़ोर भया थोड़ा ॥ ५ ॥

सील क्षिमा आय थाना गाड़ा । काम क्रोध पर पड़ गया धाड़ा
स्वामी मेहर करी अब भारी । मैंभी उन चरनण बलिहारी ॥७॥
अब तो सरण पड़ी राधास्वामी । राखो संग सदा अंतर जामी
मेरे और न कोई दूजा । मेरे निस दिन तुम्हरी पूजा ॥९॥
तुम बिन और न कोई जानू । छिन २ मनमें तुम को मानूं ॥१०
मैं मछली तुम नीर अपारा । केल करूं मैं तुम्हरी लारा ॥११॥
मैं पपीहा तुम स्वांति के बादल । सुख पाये दुख गये हैं रसातल

तुम चंदा मैं कमोदन होनी । तुम्हरी लगन में निस दिन भीनी ॥
मैं धरनी तुम गगन विराजे । कैसे मिलूं मैं तुम संग आजे ॥१४॥
सुरत निरत से चढ़ कर धाऊं । कभी न छोडूं अस लिपटाऊं ॥
मैं गुरु वरती राधास्वामी के चरण की ।
लाज रखो मेरी काल से अबकी ॥ १६ ॥
तुम्हरे बल से भई हूं निचिंती । अब मन में नहिं शंका धरती १७
सूर किया स्वामी खेत जिताया । मार लिया मैंने मन और माया

ख़ाक मिला सब कपट ख़ज़ाना। भाग गया दल मोह पुराना १९
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर लीन्हा। सुन्न शिखर पर डंका दीन्हा
सिंध महासुन बीच में आया। सतगुरु कृपा ने दीन तराया
भंवर गुफ़ के महल विराजी। सत्तलोक चढ़ अचरज गाजी॥
अलख लोक में सूरत साजी। अगम लोक को छिन में भाजी २३
पोहप सिंहासन क्या कहूं महिमां ।
जहां राधास्वामी ने धारे चरना॥ २४॥

उन चरनन पर जाय लिपटानी ।
आगे अकहकी क्या कहुं वानी ॥ २५ ॥
अब आरत मैं कीन्ही पूरी ।भापा भेद अगम गम मूरी ॥ २६ ॥
राधास्वामी की चरण धूर धर ।
आय गई अपने मैं निज घर ॥ २७ ॥

सा० नं० श० २० (शब्द ३९) सफ़ा १३६

सुरत आज चली आरती धार । गुरन पै चली आरती धार १

नाना विधि के भूषण पाहिने। कर अपना सिंगार ॥ २ ॥
मन के मोती चित की चुन्नी। विरह नथनिया डार ॥ ३ ॥
नेह नौगरी चेतन चुटकी। बिछुआ पहर विचार ॥ ४ ॥
पांच मुंदरा मुंदरी पहिरी। हिरदे हार संवार ॥ ५ ॥
करन फूल करुणा गुरु पाई। पहुंची गुर दरबार ॥ ६ ॥
छन्न पछेली छान ज्ञान की। नौनग तज नौ द्वार ॥ ७ ॥
पांच तत्त पचलड़ी बनाई। सीस फूल लख गगन मंझार ॥ ८

वैना वैन सुने अनहद के । अधर चन्द्र का खोला द्वार ॥ ९ ॥
जुगनी जुग बांधा सतगुर से । चली आरसी पार ॥ १० ॥
अनवट वाट खुली अंदर में । मंदर जोत निहार ॥ ११ ॥
झूमर अमर नगीना देखा । झूमी झुम के डार ॥ १२ ॥
सुमिरन नाम गुळू वंद डाला । हंसली सील सम्हार ॥ १३ ॥
मोह तोड़ तोड़ा गल डारा । सतलड़ हुई सत की लार ॥ १४
घुंगरू झांझ वजे घट भीतर । सोभा पाय जेव उजियार ॥ १५

बांक बंक के द्वार समानी । टीका टेक अधार ॥ १६ ॥
तिल के छल्ले पिलक्कर पहिरे । कड़े कड़क धुन सार ॥ १७ ॥
चंपाकली कंवल की कलियां । दलपर अजब बहार ॥ १८ ॥
चौकी चौक निहार सुन्न का । चमक दामिनी पार ॥ १९ ॥
मन इंद्री बस छल्ला पहिना । लटकन लटक सम्हार ॥ २० ॥
बेसर सरोवर सुरत लगाई । हंसन साथ किया जाय प्यार ॥ २१
महासुन्न चढ़ भंवर गुफ़ा पर । भंवर कली मुरली झनकार २२

सुन २ धुन सतलोक सिधारी । मिली पुर्ष से नार सुनार ॥ २३
सतपुर्ष संग आरत कीनी । हाथ लिया सत सोहंग सार २४
कोट चंद्रमा सूर करोड़ों । जोत जगाई अधिक सुधार ॥ २५॥
पूरण पद पूरण परशादी । दई राधास्वामी निरख निहार २६
हीरे लाल निछावर कीन्हे । उमंग बढ़ी जाका वार न पार २७

सा० नं० श० ५ (शब्द ४०)सफ़ा ३६१

भजन कर मगन रहो मन में ॥ टेक ॥

जोजो चोर भजन के प्रानी सोसो दुक्ख सहें ॥१॥
आलस नींद सतावे उनको । नित २ भर्म वहें
काम क्रोध के धक्के खावें । लोभ नदी में डूब मरें
गुरु संग प्रीत करें नहीं पूरी । नाम न डोर गहें ॥४॥
तृष्णा अग्नि जलें निस बासर । नर्क न माहिं पड़े ॥५॥
संतन साथ विरुध बढ़ावें । उलटी बात कहें ॥६॥
सत संग महिमां मूल नजाने । भेड़ चाल में नित पचें

धन और मान भोग रस चाहैं। रोग सोग में आन फसें ॥७॥
भाग हीन मत हीन पिरानी। नर देही बर वाद करें ॥९॥
ऐसी दशा माहिं नित बरतें। हम क्यों कर समझाय सकें १०
साध गुरू का कहन न मानें। मन मत अपनी ठान ठनें ॥११॥
खर कूकर सम वे नर जानो। विरथा उदर भरें
जमपुर जाय बहुत पछ तावें। वहां फिर उन की कौन सुनें
जन्म २ चौरासी भोगे। यह शरीर फिर नाहिं धरें ॥१४॥

दुर्लभ देह मिली यह औसर। ऐसी कर जो बात बने ॥१५॥
सतगुरु सरन पकड़ ले अबकी। तौ सब काज सरें ॥१३॥
हित का वचन दया कर बोलें। तू नहिं कान सुनें ॥ १७ ॥
अंधा नहरा फिरे जगत में। कुल कुटुंब तेरी हान करें ॥१८॥
कर सत संग मान यह कहना। कान आंख फिर दोऊ खुलें
देखे घटमें जोत उजाला। सुने गगन में अजब धुनें ॥ २० ॥
सुन्न जाय तिरवेनी न्हावे। हीरा मोती लाल चुने ॥ २१ ॥

दम्पत आरत करूं राधास्वामी । प्रेम सहित गाऊं गुन नामी १

कर पकवान मिष्टान भोग धर । और बस्तर गोदन के सजकर

लाय भेट स्वामी के राखे । तब स्वामी अस अज्ञा भाखे ॥ ३ ॥

करो आरती प्रेम सिंगारी । बार बार अस आरत धारी ॥४॥

हम भी आरत करें बनाई । राधास्वामी रहो सहाई ॥ ५ ॥

सुरत शब्द भांवर अब लीन्ही । सदा सुहाग अचल गुरु दीन्ही

गुरु दयाल तौ कुल दयाला । सतगुरु पूरे करें निहाला ॥७॥

उन चरनन पर जांऊं बलिहारी । उन बिन कौन करे उपकारी
मैं किंकर तुम चरन अधारा। तुम बिन को अब करे उबारा ॥
मस्तक हाथ धरो अब हमरे। प्रीत लगी अब चरनन तुम्हरे॥
ऐसी कृपा करो राधास्वामी। भक्ति जुक्ति मोहिं देवो अनामी॥
मन और सुरत दोऊ मिल आये। नूर तुम्हार हिये में लाये ।१२।
अब दोनोंको लेकर सरना। मारग अगम लखावो अपना ॥१३॥
सुरत चढ़ावो सहस कंवल में। रूप निहारूं जोत अब तिलमें॥

फिर आगे को चढूं बंकमें। लखूं तिरकुटी धाम उमंग में ॥१५॥
सुन्न शिखर चढ़ पहुंचूं छिनमें। महा सुन्न का धारूं पनमें ॥१६
भंवर गुफा बैठूं सुन धुन में। बीन बजाऊं जा सतपुर में ॥१७॥
अलख अगम की दया समाई। राधास्वामी नाम सुनाई ॥१८॥
सुनूं नाम और धारूं चितमें। कर्म भर्म फाडूं यक पल में ॥१९॥
कर सत संग मलिनता नाशी। घट में चेतन कीन प्रकाशी ॥२०
अंध घोर अज्ञान नसाना। घोर अनाहद मिला ठिकाना ॥२१॥

सुन २ धुन मगनानी ऐसी। मीन मगन रहे जल में जैसी ॥२२॥
दासी दास जुगल सरन आये। करके व्याह आरती गाये ॥२३॥
भेंट चढ़ावें अब अति गहरी। तन मन धन तो तुच्छ भयेरी
मैं अजान कुछ मर्म न जानूं। राधास्वामी नाम वखानूं ॥२५॥
तुम दयाल मेरी आरत मानो ; हम अजान तुम गति न पिछानो
राधास्वामी दर्श भाग से पाया।
राधास्वामी सरन ।चित अब आया

प्रे० बा० १ नं श० २४ (शब्द ४२) सफ़ा २१८

खेल रही सुरत मतवारी । गुरु चरनन में प्रीत करारी ॥ १॥
कंवल कियारी फूलसंवारी । भक्ति पौद सींचे वनवारी ॥२॥
कली २ गुलशब्द खिलाई । धुन झनकार अमीं बरसाई ॥३॥
अष्ट कंवल दल थाल बनाई । शब्द प्रकाशा जोत जगाई ॥४॥
सूरज मुखी खिला गुरु द्वारे । सेत चांदनी सुन्न निहारे ॥ ५॥
चंपा खिला भंवर की कलियां। सेत पदम सतलोक दमनियां

जहं तहं फूल रहीं फुलवारी। कंवल २ की शोभा न्यारी ॥७॥
सरवर तरवर अनेक दिखाई। शोभा उनकीं बरनी न जाई ८
कोटिन सूर चंद फल लागे। सुरत मगन हुई अचरज ताके ९
अमी धार की बरखा भारी । सत्त पुरुष अद्भुत छवि धारी
दरशन करत सुरत हरखानी। सतगुर की गत अगम बखानी
वहां से चली अधर को धाई । अलख अगम का भेद सुनाई
तिस के परे अनामी लेखा। रूप रंग नहीं और नहीं रेखा १३

यह निज देश संत का जाना । राधास्वामी नाम बखाना ॥ १४

जोगी ज्ञानी सब थक बैठे । मान और अहंकार रहे पैठे ॥१५॥

संत सरन महिमा नहीं जानी ।

संत वचन नहीं किये प्रमानी ॥ १६ ॥

संत दयाकर बहु समझावें । यह मनमुखी चित्त नहीं लावें १७

वाच लक्ष का निरने करते । लक्ष माहिं वे विरती धरते ॥१८॥

लक्ष रूप को व्यापक माना । सूरत चेतन्य का मरम नजाना ॥

मन चेतन में जाय समाई । येही लक्ष रूप ठहराई ॥२०॥
काल देश में रहे भुलाने । दयाल देश की खबर नजाने ॥२१॥
याते जनम मरन नहिं छूटा । फिर २ चौरासी जम लूटा ॥२१॥
अपना भाग सराहूं माई । राधास्वामी चरन सरन में पाई ॥
किरपा कर मोहिं लिया अपनाई । काल जाल से लिया बचाई ॥
सत संग कर हिये दृष्ट खुलानी । संत मते की महिमा जानी ॥
उमंग सहित यह आरत गाऊं । राधास्वामी मेहर परशादी पाऊं

नित २ सूरत शब्द लगाऊं । राधास्वामी चरनन सहज समाऊं

प्रे० बा० १ नं श० ७ (शब्द ४३) सफ़ा ३१८

चरन गुरु प्रेम बढ़ा भारी । सुरत हुई गुरु चरनन प्यारी ॥१॥
सहस मन चंचलता छोड़ी । मोह जग छिन में सब तोड़ी ॥२॥
भोग सब लागे अब फीके । पदारथ माया के छीके ॥३॥
सरन गुरु चरनन दृढ़ करती । प्रेम नित हिये अंतर भरती॥४
सेव गुरु निस दिन चित भाई । चांदनी हिये अंतर छाई॥५॥

गही गुरु चरनन दृढ़ परतीत । त्याग दई मन से जग की रीत
कहूं क्या महिमा राधास्वामी । काढ़ लिया मोहि अंतरजामी
मेहर कर चरनन लिया लगाय ।
दया कर मुझको लिया अपनाय ॥ ८ ॥
नहीं तो करम भरम बहती । काल के दुख सुख नित सहती
बड़ा मेरा जागा भाग बली ।
सुरत मेरी राधास्वामी चरन रली ॥ १० ॥

संग गुरु कस कहूं महिमा गाय।
सुख सय भांति दुख नहीं पाय ॥ ११ ॥
कसर सब मन की है अपने।
संग में दुख नहीं सुपने ॥ १२ ॥
करेगा जो कोई गुरु का संग। विरोधी होंगे सबही तंग ॥ १३ ॥
करे कोई चाहे जितना ज़ोर। पकड़ सब जावेंगे ज्यों चोर ॥
काल का रहा न कुछ अख्तियार। डगर तज बैठी माया हार

गाऊं गुरु महिमा बारंबार। करी जिन मुझ पर दया अपार
काट दिया काल अधम का जाल।
करम के मेटे सब दुख साल ॥ १७ ॥
उमंग हिये बढ़ती अब दिन रात।
करूं गुरु सेवा नई २ भांत ॥ १८ ॥
गाऊं अब आरत सखियन साथ।
चरन में राधास्वामी धर २ माथ ॥ १९ ॥

थाल दृढ़ भक्ती लेऊं सजाय।
उमंग की जोत जगाऊं आय ॥ २० ॥
करी राधास्वामी दृष्ट निहार। गये सब संशय बाढ़ा प्यार
उमंग कर सुरत अधर चढ़ती। संख धुन गरज गगन सुनती
सुन्न में बजती सारंग सार। गुफा धुन मुरली करत पुकार
लोक सतपुरुष दरश पाती। अलख और अगम की चढ़ घाटी
दरश राधास्वामी पाया सार। हुई मैं छिन २ उन बलिहार

लिया मोहिं राधास्वामी अंग लगाय ।
परम छवि राधास्वामी मोहि सुहाय ॥ २६ ॥
गाऊं गुन राधास्वामी वारंबार ।
रहूं नित हाजिर गुरु दरबार ॥ २७ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ८ (शब्द ४४) सफ़ा ३२२

उमंग मेरे हिये अंदर जागी । हुआ मन गुरु चरनन रागी ॥१॥
बचन सुन हिरदे बाढ़ी प्रीत । शब्द की आई मन परतीत ॥२॥

दरश गुरु करूं संम्हार २। मगन होय पिऊं अमी रसधार ॥३॥
हुआ मोहि गुरु भक्ति आधार। पंथ गुरु चलूं विचार २ ॥४॥
गुरू मोहि दई प्रेम कीदात। गाऊं गुन उनका दिन और रात ॥
चलो हे सखियों मेरे साथ। गुरू का पकड़ो दृढ़ कर हाथ ॥६॥
करो तुम सत संग मन को मार। जगत की तजो वासना झाड़
सुरत से करो शब्द का खोज। निरख घट अंतर मारो चौज ॥८
गुरू ने मोहिं दीना भेद अपार। देखती घट में अजब बहार ॥९॥

सराहूं छिन २ भाग अपना । गुरू ने मेट दिया तपना ॥१०॥
जगत का फीका लागा रंग । हुये मन माया दोनो तंग ॥१२॥
काल का करज़ा दिया उतार । करम का उतर गया सब भार
हुई गुरु चरनन दृढ़ परतीत । दीनता धारि बाढ़ी प्रीत ॥१३॥
छोड़ दिया मन ने जग ब्यौहार । भोग सब होगये अब बीमार॥
मेहर बिन कस पाती यह दात । जगत में बहती दिन और रात
कभी नहीं मिलता यह आनन्द । काल ने डाले थे बहु फंद ॥१५

लिया मोहि गुरु ने आप निकाल। काट दिये माया के सब जाल॥
कहूं कस महिमां सतसंग गाय। भाग बिन कैसै यह सुख पाय
पड़ीथी जगमें निपट अजान। गुरू ने संग लगाया आन॥१९॥
शुकर उन कस २ करूं घनाय। कहन और लेखन में नहीं आय॥
सुरत मन नभ पर पहुंचे धाय। शब्द धुन घंटा संख बजाय॥
सुना त्रिकुटी में भारी शोर। गरज और मृदंग बजते घोर॥
सुन्न में पिया अमीरस धाय। बांसरी सुनी गुफा में जाय॥

बीन धुन सतपुर में जागी । अलख लख अगम सुरत लागी ॥
दरश राधास्वामी पाया आय । प्रेम और उमंग रहा हिये छाय
आरती सन्मुख धारी आय । चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥
रूप राधास्वामी आज दयाल । सरन दे मुझको किया निहाल॥

ग्रं० वा० १ नं० शा० ७० (शब्द ४५) सफ़ा ४८३

सुरत हुई मगन चरन रस पाय । ध्यान गुरु मूरत हिये बसाय
कहूं क्या महिमा अचरज रूप । बिराजे अगम लोक कुल भूप ॥

पिता प्यारे राधास्वामी दीन दयाल।
दरश दे मुझको किया निहाल ॥ ३ ॥
शब्द का भेद अगम्म अपार। दया कर दीना मुझको सार ॥४॥
हुआ मन चरनन पर बलिहार। सुरत हुई प्रेम रंग सरशार ॥५
जगतका देखा रंग असार। दई गुरु ऐसी दृष्टी डार ॥६॥
हुआ मन भोगन से बेज़ार। गुरू अस कीनी मेहर अपार ॥७॥
संग गुरु बढ़ता नित्त पियार। प्रेम की बरखा होत अपार ॥८॥

दरस गुरु चूअत अमृत धार। वचन गुरु पावत मन आधार
दीन दिल गावत महिमां सार। शुकर कर हियेसे वारं वार।१०
मिले मोहिं प्रीतम गुरु दातार। मेहर कर लीना गोद बिठार ११।
सरन मोहिं निज चरननमें दीन। हुआ मन सतगुरु मौज अधीन
शब्द संग सुरत चढ़ी आकाश। निरखिया सहस कंवल परकाश
सुनत धुन घंटा मगन भई। संख धुन सूरत खैंच लई ॥१४॥
परे तिस सुनियां धुन ओंकार। हुआ गुरु सूरत संग पियार १५

वहांसे पहुंची सुन्न मंझार। बजत जहां किंगरी सारंग सार
मानसर किये जाय अश्नान ; लगा फिर सोहंग धुन से ध्यान
भंवर चढ़ गई अमरपुरमें। बीन धुन सुनी मधुर सुरमें ॥१८॥
अलख पुर गई पुरुष धर ध्यान। अगम पुर पाया नाम निधान
परे तिस लखिया पुरुष अनाम।
चरन में राधास्वामी दिया बिश्राम॥
आरती अद्‌भुत लीन सजाय। लिये मैं राधास्वामी खूब रिझाय

मेहर से काज हुआ पूरा । हुआ मैं चरन सरन धूरा ॥२२॥
संत बिन नहीं पावे यह धाम । रहे सब माया नार गुलाम ॥२३॥
जगत में जो मत हैं जारी । न जावें काल देस पारी ॥२४॥
नहीं कोई जाने संतन भेद । सहें सब काल करम के खेद ॥५५॥
भाग मेरा धुर का जागा आय । भेद राधास्वामी मत का पाय ॥
सहज राधास्वामी सरन मिली ।
सुरत मेरी राधास्वामी चरन रली ॥२७॥

प्रे० बा० १ नं० श० ११६ (शब्द ४६)सफ़ा ६०४

संत मत महिमां सुनत अपार। लाय रहा चरनन में निज प्यार

अगम गत संत न जाने कोय। गए सब करमन संग विगोय

भरम में भूल रहा संसार। भेद नहीं पावे सत करतार॥३॥

पता मोहि मिलिया राधास्वामी धाम।

भाव संग पकड़ा राधास्वामी नाम ॥ ५ ॥

पढ़त गुरुबानी जागी प्रीत। विरह दरशन की साली चीत

मेहर हुई चरनन में आया। सहजही गुरु दरशन पाया ॥६॥
देख गुरु संगत हुलसाया। वचन गुरु अमृत बरसाया ॥७॥
सुरत मन भींज रहे गुरु रंग।कहूं क्या गत मत अचरज संग
प्रेम की धारा उमंग रही। चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लई ॥९॥
वचन सुन अस निश्चय धारा। संत बिन नाहिं जिव निस्तारा
सुरत और शब्द जुगत सारा।
बताई गुरु मोहि कर प्यारा ॥ ११ ॥

भेद निज घर का समझाया । देस संतन का लखवाया ॥१२॥

जगत का कारज थोथा जान ।

भोग सब इंद्री रोग समान ॥ १३ ॥

समझ गुरु बचन धार बैराग । बढ़ाओ चरनन में अनुराग १४

चलो घर पकड़ शब्द की धार । अमरपुर तीन लोक के पार

मेहर हुई बिरह शब्द जागी । सुरत मन धुन रस में पागी १६

करूं मैं नित अभ्यास सम्हार । चढ़ाऊं सूरत उलटी धार १७

होय जब राधास्वामी गुरू दयाल।
तोड़ तिल देखूं जोत जमाल॥ १८॥
बंक धस त्रिकुटी चढ़ जाऊं। शब्द गुरु दरशन वहां पाऊं१९
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय।
देऊं सब कल मल दूर बहाय॥ २०॥
महासुन घाटी चढ़ भागूं। भंवर धुन मुरली संग पागूं॥२१॥
अमरपुर दर्शन सत पुरुष पाय।

अलख और अगम में पहुंची धाय ॥ २२ ॥

चरन राधास्वामी निरखूं सार ।

करूं वहां आरत उमंग सम्हार ॥ २३ ॥

कौन यह पावे धुर पद सार ।

करी मोपै राधास्वामी दया अपार ॥ २४ ॥

रहे थक सब मत रस्ते माहिं । पाई मैं राधास्वामी चरनन छांह

करे कोई जतन अनेक सम्हार । न पावे संतन का पद सार

बनाया राधास्वामी मेरा काज। दया मोपे कीनी पूरन आज॥

प्रे बा० २ नं० श० २३ (शब्द ४७) सफ़ा ४५

जगत में घेरा डाला काल। बिछाया माया ने जंजाल ॥ १ ॥
जीव सब फंस रहे भोगन में। विकल हुये सोग और रोगनमें
करम और धरम का कीन पसार। पूज रहे देवी देवा झाड़ ॥
संत मत भेद नहीं पाया। काल मत सब जिव भरमाया ॥४॥
भेष और पंडित रहे अजान।

जगत में माया संग भुलान ॥ ५ ॥
कोई दिन मैं भी रहा भरमाय । देव किरतम की पूजा लाय ६
सुनी जब संत मते की बात । हरखिया मन और फड़का गात
धाय कर सतसंग में आया । मगन हुआ गुरु दरशन पाया ८
वचन सुन मन निश्चल हूआ । ध्यान धर चित निरमल हूआ
सुरत और शब्द जुगत को पाय ।
प्रेम अंग नित अभ्यास कराय ॥ १० ॥

शब्द रस घट में पियत रहूं । दरश गुरु निरखत जियत रहूं
संत मत सब से बढ़ जाना । और मत मग में अटकाना ॥१३॥
मेरे मन हुआ अस बिस्वास । संत बिन कोई नहिं पुजवे आस
कहूं मैं सब से यही पुकार । चरन राधास्वामी धारो प्यार १४
संत मत धारो हिये परतीत । चरन में गुरु के लावो प्रीत १५
सुरत और शब्द कमावो कार । होय तब तुम्हरा जीव उधार
नहीं तो पड़े रहो नौवार । काल की फिर २ खावो मार १७

सराहूं छिन २ अपना भाग । गुरू मोहि दीना अचल सुहाग१८

नीच मन जग में रहा भरमाय ।
गुरू मोहिं लिया अपनी सरनाय ॥ १९ ॥

गुरू की गत मत मैं नहीं जान । दरश दे खैंच लिये मन प्रान ॥
जगत का नहीं भावे अब ढंग । लगा अब फीका माया रंग ॥२१॥

पिरेमी जन संग लागा नेह । टूट गया जग जिव संग सनेह ॥
गुरू संगत मे नित खेलूं । पिरेमी जन संग मन मेलूं ॥

दरश गुरु छिन २ बढ़ता चाव । चरन में निस दिन बढ़ता भाव ।
गुरू बल नभ में पहुंचूं आज । गगन चढ़ सुनूं नाम की गाज॥
सुन्न चढ़ भंवर गुफा को धाय ।
लोक सत अलख अगम दरसाय ॥ २६ ॥
चरन राधास्वामी सेव रहूं । उमंग अंग दृढ़ कर सरन गहूं ॥

प्रे० बा० २ नं०श० २ (शब्द ४८) सफा १०९

राधास्वामी प्रीत जगाऊं निस दिन ।

राधास्वामी रूप धियाऊं छिन २ ॥ १ ॥
राधास्वामी गुन गाऊं मैं हितसे ।
राधास्वामी शब्द सुनूं मैं चितसे ॥ २ ॥
राधास्वामी संग करूं मैं मन से ।
राधास्वामी सेव करूं मैं तनसे ॥ ३ ॥
राधास्वामी बिन कोई और न जानूं ।
राधास्वामी सम कोई और नमानूं ॥ ४ ॥

राधास्वामी बिन कोई और न आसा ।
राधास्वामी चरन चहूं नित बासा ॥५॥
राधास्वामी चरन भरोसा भारा ।
राधास्वामी सम कोई और न प्यारा ॥६॥
राधास्वामी मेरे नैनं उजारा ।
राधास्वामी बिन जग में अंधियारा
राधास्वामी मेरे प्रान अधारा ।

राधास्वामी बिन कोई नाहिं सहारा ॥८॥
राधास्वामी जग से लिया उबारी ।
राधास्वामी पर जाऊं बलिहारी ॥ ९ ॥
राधास्वामी कीना कारज पूर ।
राधास्वामी चरनन धारी धूर ॥ १० ॥
राधास्वामी पकड़ा मेरा हाथ ।
राधास्वामी का अब तजूं न साथ ॥ ११ ॥

राधास्वामी दीना धुन का भेद ।
राधास्वामी मेटे करमन खेद ॥ १२ ॥
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ।
राधास्वामी किया भौसागर पार ॥ १३ ॥
राधास्वामी काटदई कल फांसी ।
राधास्वामी मेट दई चौरासी ॥ १४ ॥
राधास्वामी परम पुरुष दातार ।

राधास्वामी धरा गुरू औतार ॥ १५ ॥
राधास्वामी कीना जीव उबार ।
राधास्वामी काटा माया जार ॥ १६ ॥
राधास्वामी मेरा भाग जगाया ।
राधास्वामी मोहिं निज दास बनाया ॥ १७ ॥
राधास्वामी कीनी भारी मेहर ।
राधास्वामी मेटा काल का क़हर ॥ १८ ॥

राधास्वामी लिया बचा करमन से ।
राधास्वामी दिया हटा भरमन से ॥ १९ ॥

राधास्वामी महिमा कस २ गाऊं ।
राधास्वामी २ सदा धियाऊं ॥ २० ॥
राधास्वामी चरन अधार जिऊं मैं ।
राधास्वामी अमृतसार पिऊं मैं ॥ २१ ॥
राधास्वामी घट का परदा खोल ।

मोहिं सुनाये बचन अमोल ॥ २२ ॥
राधास्वामी घंटा संख सुनाय ।
त्रिकुटी लाल सूर दरसाय ॥ २३ ॥
राधास्वामी दसवां द्वार खुलाया ।
चन्द्र चांदनी चौक दिखाया ॥ २४ ॥
भंवर गुफा गई राधास्वामी संग ।
मुरली धुन जहां सुनी निसंक ॥ २५ ॥

राधास्वामी सत्तलोक पहुंचाया ।
राधास्वामी अलख अगम परसाया ॥ २६ ॥
राधास्वामी चरन परस हरखाई ।
राधास्वामी मेहर से निज घर पाई ॥ २७ ॥

प्रे० बा० ४ नं० शा० ९५ (शब्द ४९)

प्रेम की महिमां क्या गाई । हिये में सीतलता छाई ॥ १ ॥
प्रेम जिस घट में किया परकाश ।

गया तम हुआ शब्द उजियास ॥ २ ॥
पिरीतम हिरदे में बसिया । सुरत मन चरन लाग रसिया ३
प्रेम राधास्वामी चरनन लाय । हिये में निस दिन आनंद पाय
प्रीत गुरु चरनन आन धरी । सुरत घट धुन संग गगन भरी
लगा चाहि गुरु सतसंग प्यारा । हुआ मन जग से अब न्यारा
वचन सुन जग उगलत मनुवां । चढ़त नित घट में गहि धुनुवां
सुनत सतसंग की महिमां सार । सुरत आई उमगत गुरु दरबार

प्रीत हिये भर २ करती सेव। धरत परतीत चरन गुरु देव१०
सुनत गुरु वचन धार अनुराग। भोग जग देती मन से त्याग
करत नित भजन बिरह अंग लाय।
शब्द संग सूरत नित रस पाय ॥ ११ ॥
दया गुरु घट में परख रही। चाल मन इंद्री निरख रही ॥ १२॥
रूप गुरु हिये में ध्याय रही। सरन गुरु मन में पकाय रही १३
पाय घट आनंद चरन बिलास। चरन गुरु बढ़ता नित बिस्वास

उमंग अंग आरत गुरु धारी । हुये अब तनमन सुखियारी ॥ १५

मेहर की दृष्टि करी गुरु ने । सुरत मन लागे घट चढ़ने ॥ १६ ॥

तोड़ तिल गई सुरत नभ मांहि ।

जोत लख मिटी काल की दांय ॥ १७ ॥

गगन चढ़ शब्द गुरू दर्शन । मिलेआर वारा तन मन धन ॥१८

सुन्न में चढ़ गई सुरत अकेल। करत वहां हंसन संग अवकेल॥

भंवर में गई महां सुन्न पार। सुनी धुन सोहंग मुरली सार॥५०

सत पुर दर्शन सत पुर्ष पाय । बीन धुन सुनत रही हरषाय ॥
वहां से अलख के पार गई । अगम लख राधास्वामी चर्न पई ॥
वहीं है राधास्वामी का निज धाम । परम गुरु संतन का बिसराम
मिला वहां अद्‌भुत भक्ती साज । सुरत का होगया पूरा काज
दया गुर मिला निज घर येही । शब्द में सूरत जब देई ॥ २५ ॥
करी यहां आरत राधास्वामी जोर । सुरत हुई प्रेम रंग सरबोर
परम पुर्ष राधास्वामी हुए सहाय ।

लिया मोहिं अपनी गोद बिठाय ॥ २७ ॥

प्रे० बा० ४ नं० श० ९९ (शब्द ५०)

सुरतिया हरख रही । निरखत गुरु चरन बिलास ॥१॥
बिगसत खेलत संग गुरूके । दिन २ बढ़त हुलास ॥२॥
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन में । तजत काम और भोग बिलास
उमंग २ कर गावत बानी । मगन होय रहै गुरु के पास ॥४॥
चित दे सुनत बचन सत संग के ।

चेत करत घट में अभ्यास ॥५॥

मन और सुरत सिमट कर चालें। तजत देस जहां माया बास
तीसर तिल धस सुनती बाजा। लखती जहां वहां जोत उजास
गगन ओर धावत सुरत प्यारी। पावत काल तिरास ॥८॥

अधर चढ़त सुन २ धुन अच्छर। सुन्न में हंसन संग बिलास॥
भंवर गुफ़ा धुन सुन गई आगे। निज सूरज संग मिला अभास
अलख अगम लख हुई अचिंती। मिलगई प्रेम आनंद की रास

प्रेम पियारी सुरत रंगीली । प्यारे राधास्वामी की हुई ख़वास
दर्शन कर अतिकर मगनानी । पाय गई धुर धाम निवास १३॥
प्रेम प्रताप छाय रहा घट में । प्रेम सरूप किया हिरदे वास ॥
यह गत मत है अगम अपारा । पावे मेहर से कोई निज दास॥
कर सतसंग गहे स्वामी सरना । सुरत चढ़ावे निज आकाश
सुरत होय तब स्वामी प्यारी । प्रेम की दौलत पावे ख़ास १४
राधास्वामी मेहर दृष्टि से हेरें । प्रेम दुलार होय ख़ासुलख़ास

जोअस दुर्लभ भक्ति कमावे । जावे निज घर विन परियास ॥
सुरत निमानी मेरी स्वामी संवारी ।
गावत उन गुन स्वांसो स्वांस ॥२०॥
प्रेम दुलारी शब्द पियारी । होय निहाल वैठी चरनन पास २१
दयाल सरन ले काज वनाया । तजदिया जगका मोह और आस
प्रेम अधार जियत सुत प्यारी । जगसे रहती सहज उदास २३
धूम हुई भक्ती की भारी । करम भरम सब हो गये नाश ।२४॥

प्रेम अधारी सुरत सिरोमन । आरत दीपक करती चास ॥२५॥
सब सखियां मिल आरत गावें ।
राधास्वामी चरनन धर बिस्वास ॥२६॥
दया करी राधास्वामी प्यारे । घट २ कीना प्रेम प्रकाश ॥२७॥

सा० नं० श० ४ (शब्द ५१) सफा ८९

गुरुमता अनोखा दरसा । मन सुरत शब्द जाय परसा ॥१॥
लीला घट देखी भारी । हुई सुरत गगन पनिहारी ॥२॥

अमृत रस भर २ पीया । तन मन सब सीतल हुआ ॥३॥
चोरी अब चोरन त्यागी । घर उनके अगनी लागी ॥४॥
साहु अब घट में जागे । पहरादे शब्द अनुरागे ॥५॥
गुन गावत मन हुलसाया । धुन धावत अधर चढ़ाया ॥६॥
जगमग हुई जोत उजियारी । घट खिल गई कंवल कियारी ॥
सुंदर की खिड़की खोली । सुखमन में धुन नित बोली ॥८॥
चढ़ी वंक किवारी खोली । त्रिकुटी जा हुई अमोली ॥ ९ ॥

ज्यों फेरत पान तमोली। यों धुन घट सूरत रोली ॥१०॥
क्या महिमा गुरु पद गाऊं। छिन २ में उमंग बढ़ाऊं ॥११॥
सुर नर मुनि गति नहिं जानी ॥ यह अचरज अकथ कहानी
सुन्न में जा शब्द समानी। अद्भुत धुन क़िंगरी छानी ॥१३॥
गई महासुन्न के नाके। गुर दया अचंभा ताके ॥१४॥
फिर भंवरगुफ़ा लगी डोरी। सोहंग जा सूरत जोड़ी ॥१५॥
सतगुर पद सत कर जाना। गति मति क्या कहूं बखाना ॥१६

ससि सूर अनेकन पांती । देखे और आगे जाती ॥१७॥
लख अलख अगम दरसाना । मिला राधास्वामी नाम निशाना॥
यह अजब परम पद पाया । अब तक कोई भेद न गाया ॥१९॥
नहिं वेद कितेब सुनाया । जोगी नहिं ज्ञानी धाया ॥२०॥
यह वस्त अमोलक पाई । कोई बिरले संत बताई ॥२१॥
मेरे राधास्वामी परम दयाला । जिन कीन्हा मोहिं निहाला ॥२२
मैं आरत उनकी करता । तन मन दोऊ चरनन धरता ॥२६॥

मैं हरदम यही पुकारूं । मत अगम अगाध सम्हारूं ॥२४॥
मेरा भाग उदे हो आया । राधास्वामी चरन धिआया ॥२५
जग स्वाद लगा सब फीका । राधास्वामी नाम मैं सीखा ॥५६॥
गति मति मेरी उलटी पलटी । गुरु कार दई सूरत सुल्टी ॥२७॥
मेरा काज हुआ सब पूरा । मैं राधास्वामी चरनन धूरा ॥२८॥

सा० व० श० २१ (शब्द ५२) सफ़ा १३९

गुरुमुख प्यारा गुरू अधारा आरत धारारी ॥ १ ॥

चरन निहारा सरण सम्हारा शब्द सिंगारा री ॥ २ ॥
राग निकारा बिरह पुकारा सुरत संवारा री ॥ ३ ॥
काल विडारा मन को मारा इंद्री जारा री ॥ ४ ॥
गगन सिधारा नाम सिहारा सुन्न मंझारा री ॥ ५ ॥
रूप अपारा नैन उघाड़ा देख पसारा री ॥ ६॥
खोल किवाड़ा पाट उघाड़ा श्याम दुआरा री ॥ ७ ॥
कर दीदारा सेत अखाड़ा कर्म पछाड़ारी ॥ ८ ॥

निरमल धारा अगम अगारा अमी अहारा री ॥९॥
चैाक अपारा अजब वहारा कौन विहारा री ॥१०
धुन धधकारा छांटी सारा गुरु दरबारा री ॥ ११ ॥
मनुआं हारा लीन किनारा शब्द कटारा री ॥ १२ ॥
गुरू दुलारा नाम चितारा सूर करारा री ॥ १३ ॥
धुन ठोंकारा सूर अकारा बजत चिकारा री ॥ १४ ॥
तुम दीन दयारा फांसी टारा कर उपकारा री ॥ १५ ॥

मैं नीच निकारा अति नाकारा औगुण भारा री ॥ १६ ॥
तन अहंकारा काम लबारा पड़ा उजाड़ा री ॥ १७ ॥
लोभ गंवारा मोह विजारा कुछ न विचारा री ॥ १८
हुआ तुम्हारा सब से न्यारा सीस चरण पर डारा री ॥ १९ ॥
चाह चमारा नहिं आचारा तौभी पार उतारा री ॥ २० ॥
सहसकंवलदल त्रिकुटी चढ़ चल खोला दसवां द्वारा री॥२१
सुन्न परे महासुन्न अंधारा देखा भंवर उजारा री ॥ २२ ॥

गुफ़ा परे सतपुर्ब हमारा पाया अब पद चारा री ॥ २३ ॥
अलख अगम को जाकर निरखा तन मन उन पर वारा री
सुरत निरत दोऊ चले अगाड़ी धाम मिला निज सारा री ॥२५
आरत कर २ प्रेम बढ़ाऊं धृग २ सब संसारा री ॥ २६ ॥
राधास्वामी सतगुरु पाये उन पर मैं बलिहारा री ॥ २७ ॥
कहा कहूं कुछ कहत न आवे मैं अब उनकी लारा री ॥२८

सा० नं० श० २४ (शब्द ५३) सफ़ा ४९१

गुरु के चरण पर चित बलिहारी ।
मन परतीत करूं दृढ़ सारी ॥१॥
कर अभिलाख दूर से आयो । अचरज दर्श नैन भर पायो ॥२
काल करी अपनी ठगियाई । मन विच नाना भर्म उठाई ॥३॥
कभी परतीत प्रीत दृढ़ताई । कभी सरन से देत कचाई ॥४॥
कभी झकोले मोहि दिखाई । कुटुंब देस की याद कराई ॥५॥
चरन गुरू ज्यों त्यों दृढ़ करता ।

फिर भरमाय जक्त में धरता ॥६॥
क्या २ कहूं काल की लीला । तपन उठावत खोंचत सीला ।७।
लीक पुरानी कुल मरजादा । तीर्थ वर्त धर्म को साधा ॥८॥
भर्म उठावत अस २ भारी । दूर हटावत प्रेम बिचारी ॥९॥
मैं बल हीन दीन सरनागत । जस जानो तस टारो आफ़त १०
यह मन चोर कठोर हमारो । लोभ लहर में बहतो सारो ॥११
आस भरोस और बिस्वासा । गुरु चरनन में करे न बासा १२

क्यों कर इस मन को समझाऊं ।

गुरु की दया बिन ठौर न ठाऊं ॥१३॥

ताते बिन्ती करूं तुम्हारी । ज्यों त्यों मन को लेवो सुधारी १४

तुम चरनन में रहूं सदारी । कभी न छोड्डू देवो क़रारी ॥१५॥

चरन भेद गुरु दिया बताई । नैन निरख जहां सुरत लगाई १६

दो तिल छूट एक तिल दरसा । जोत निरंजन का पद परसा

आगे सुखमन घाट सुहाई । द्वार बंक में जाय समाई ॥१८॥

*

घंटा संख रही लौ लाई । छोड़ ताहि फिर त्रिकुटी आई॥१९॥
गरजा बादल मृदंग सुनाई। ओंकार गुर शब्द जनाई ॥२०॥
लीला देख सुरत हरखाई । आगे सुन्न सरोवर धाई ॥२१॥
हंसन साथ उमंग बढ़ाई । मानसरोवर विमल अन्हाई ॥
महासुन्न की करी चढ़ाई । सतगुरु संग खेप निभ आई
तिमर छांट परकाश दिखाई । भंवरगुफ़ा वंसी सुन पाई ॥
सच्चखंड सतशब्द लखाई । धुन अनंत और बीन बजाई ॥

अलख अगम दर्शन दरसाई । राधास्वामी धाम समाई ॥
आरत कर लीन्हा घट भेदा । भई परापत सर्व उमेदा ॥
सकल मनोरथ पूरन हुये । रतन पदार्थ राधास्वामी दिये

प्रे० वा० १ नं० श० ४ (शब्द ५४) सफ़ा ८३

भूल भटक में बहु दिन भरमा । कहीं न पाया घर का मर्मा १
जग में बहु मत फैले भाई । निज घर का कोई भेद न पाई ॥२॥
कृतम पूजा में सब अटके । करम धरम में सब मिल भटके ॥

यह सब मते उपाये काला । त्रिगुनी माया घेरा डाला ॥ ४ ॥
जाल बिछाया भारी जग में । जीव भटक गये सब या मग में ५
सतगुर की परतीत न लावें । फिर २ चौरासी भरमावें ॥६॥
घट का खोज न काहू कीन्हा धोखे में रहे काल अधीना ॥७॥
मेरा भाग उदय होय आया ।
राधास्वामी सन्मुख ज्यों त्यों आया ॥ ८ ॥
दरशन कर मन सूरत हरखे ।

सतगुर मेहर दया निज परखे ॥ ९ ॥
सतसंग करत भरम सब भागे।
संसय रोग सोग सब त्यागे ॥ १० ॥
प्रेम प्रीत चरनन में लागी। उमंग नवीन हिये में जागी ११
मन हुआ लीन चरनन में भारी। विषय वासना दूर निकारी
जगत भाव सब मन से टारा। करम धरम का कूड़ा झाड़ा ॥ १२
अचरज खेल गूरू दिखलाया। निज घर का मोहि भेद सुनाया

सुरत शब्द मारग दरसाया। चरन सरन दे मोहि अपनाया ॥
मगन रहूं हियमें दिन राती। उमंग २ सतगुरु गुन गाती
सुनूं नित्त चित से गुरु वैना। अचरज रूप लखूं हिये नैना
बुद्धिवान करमी अभिमानी। यह सब पिल रहे मन की घानी।
जो कोई इनको कहे समझाई। सतगुर का कुछ भेद जनाई
तौ नहीं मानें करें लड़ाई। निंद्या कर बहु पाप बढ़ाई
भाग हीन भोगन में बंधे। यह सब पड़े काल के फंदे
सतगूर की महिमां नहिं जाने।

सुरत शब्द की गत न पहिचाने ॥ २२ ॥
मैं बड़ भाग सराहूं अपना । सतगुर किया मोहि निज अपना
मगन रहूं निसदिन गुन गाऊं । सुरत शब्द में नित्त लगाऊं २४
सुन २ धुन पहुंचूं नभपुर में । चरन गुरू परसू त्रिकुटी में २५
सुन्न महल धुन सारंग बाजी । भंवरगुफ़ा मुरली धुन गाजी २६
सत्तलोक सतगुर दरबारा । अर्मी अहार बीन झनकारा ॥ २७।
अलख अगम के पार ठिकाना॥निज घर राधास्वामी धाम बखाना।

आरत करूं और प्रेम बढ़ाऊं । राधास्वामी २ छिन २ गाऊं २९

प्रे० बा० २ नं० श० २१ (शब्द ५५) सफ़ा ३७

सुरत प्यारी गुरु मिल आई जाग ।
बढ़त अब दिन २ घट अनुराग ॥ १ ॥
प्रेम का राधास्वामी दीना साज ।
छोड़ दिया जग का भय और लाज ॥ २ ॥
सुरत और शब्द मिला उपदेश ।

धार रही सूरत हंसा भेस ॥ ३ ॥
कुमत अब घट से दीनी टार । सुमत का लीना सहज विचार ४
करत रहूं नित अभ्यास सम्हार ।
निरख रही गुरु की मेहर अपार ॥ ५ ॥
अगम गत राधास्वामी की जानी ।
जगत जिव क्योंकर पहिचानी ॥ ६ ॥
शब्द की कीनी घट पहिचान ।

सुरत मन धुन संग सहज मिलान ॥ ७ ॥
नाम की महिमां जानी सार ।
जपत रहूं राधास्वामी नाम अगार ॥ ८ ॥
संत मत बिन नहिं जीव उबार ।
नहीं कोई पावे निज घर बार ॥ ९ ॥
अटक रहे सब जिव करमन में ।
भटक रहे अगिनत भरमन में ॥ १० ॥

लीक में बंध रहे अज्ञानी । टेक पिछलों की मन ठानी ॥ ११

बिना सतगुर और बिन सतसंग ।
छुटे नहिं कबही माया रंग ॥ १२

भाग मेरा धुर का जागा आय ।
मिला मैं राधास्वामी संगत जाय ॥ १३ ॥

पाय निज भेद हुई शांती । दूर हुई मन की सब भ्रांति ॥ १४ ॥

सरन राधास्वामी दृढ़ करता । बचन गुरु हिये अंतर धरता १५

ध्यान गुरु रूप हिये में लाय । सुरत मन छिन २ चरन समाय
मगन रहूं हरदम मन के मांहि । गुरू की दृढ़ कर पकड़ी बांह
मेहर राधास्वामी चाहूं नित्त । चरन में जोड़ूं हित से चित्त १८
भरोसा राधास्वामी मन में राख । कहूं मैं जीवन से अस भाख
सरन में राधास्वामी आवो धाय । भाग परमारथ लेव जगाय
मेहर मोपै राधास्वामी कीन अपार ।
शुकर उन करता रहूं हरबार ॥ २१ ॥

मेहर और इतनी करो बनाय । देव मन सूरत अधर चढ़ाय
झांक तिल खिड़की जाऊं पार । सुनूं धुन घंटा नभ के द्वार ॥
वहां से त्रिकुटी पहुंचूं धाय । गरज संग ओअंग नाद सुनाय
सुन्न चढ़ हंसन संग कर प्यार । बजाऊं किंगरी सारंग सार
महासुन धाऊं सतगुरु संग । भंवर चढ़ गाऊं धुन सोहंग ॥
अमरपुर सुनूं बीन धुन सार । पुरुष का दरशन करूं निहार
अलख और अगम का दरशन पाय ।

चरन राधास्वामी परसूं जाय ॥
करूं नित आरत प्रेम सम्हार । चरन राधास्वामी मोर अधार

प्रे॰ बा॰ १ नं॰ श॰ ३ (शब्द ५६) सफ़ा ३०४

काल ने जग में कीना ज़ोर । डालिया माया भारी शोर ॥१॥
जीव सब भोगन में भरमात । नाम का भेद न कोई पात ॥२॥
करम बस दुख सुख भोगें आय ।
गये सब जम के हाथ बिकाय ॥३॥

निडर होय जगमें मारें मौज । करें नहिं सतगुरु का वह खोज
जीव का हित नाहिं दिल में लाय ।
फ़िकर नाहिं आगे क्या होजाय ॥५॥
समझ जो उनको कोइ सुनाय ।
भरम वस चित में नहीं समाय ॥६॥
मान मद डाली भारी भूल । सहेंगे जम के कारी सूल ॥७॥
वड़ा मेरा जागा भाग अपार ।

मिले मोहिं सतगुरु परम उदार ॥८॥
अवल में कुछ करनी नहिं कीन ।
दया कर चरन सरन मोहिं दीन ॥९॥
प्रेम की भारी कीन्ही दात । छुटाया करम भरम का साथ १०
शुकर कर निस दिन उन गुन गाय ।
कुसंग से लीजे मोहिं बचाय ॥११॥
रहूं मैं निस दिन चरनन पास ।

पिरेमी जन संग पाऊं बास ॥१४॥

करो अभिलाषा मेरी पूर। हुकम से तुम्हरे नाहिं कुछ दूर
जीव हित कारी नाम तुम्हार। करो अब मुझ पर दया अपार
परम गुरु राधास्वामी दीन दयाल।
दरस दे मुझ को करो निहाल ॥१५॥
मगन मन अभिलाषत दिन रात।
करूं गुरु आरत प्रेमी साथ ॥१६

थाल सत संग को लेउं सजाय। वचन गुरु सरवन जोत जगाय
करूं गुरु दरशन दुष्ट सम्हार। गाऊं अस आरत वारंवार ॥
करत मन मेरा अस बिस्वास। करें गुरु पूरन मेरी आस १९
पिया मेरे राधास्वामी प्रान अधार।
दरस पर तन मन दूंगी वार ॥ २० ॥
मोहनी छवि नहिं बरनी जाय। नैन और तन मन रहे लुभाय
भाग बड़ प्रेमी जन हैं सोय। करैं नित दरशन सुरत समोय

भाग मेरा भी लेव जगाय । देव निज दरशन पास बुलाय
सोच मेरे मन में निस दिन आय ।
मोहिं केहि कारन दूर रखाय ॥ २४ ॥
कसर मेरी कीजे सब अब दूर ।
दिखावो जल्दी अपना नूर ॥ २५ ॥
करूं मैं विनती दोउ कर जोर ।
सुनो प्यारे राधास्वामी सतगुर मोर ॥ २६ ॥

मेहर अब पूरी करो दयाल । चरन में मुझको लेव सम्हाल
गाऊं गुन तुम्हरा दिन और रात ।
चरन में प्रेमी जन के साथ ॥ २८ ॥
सुरत मन चढ़ें गगन पर घूम । सुन्न में पहुंचें वहां से झूम २९
गुफ़ा चढ़ सतपुर पहुंचूं धाय ।
अलख और अगम को निरखूं जाय ॥ ३० ॥
अनामी धाम का दरशन पाय । चरन में राधास्वामी रहूं समाय

सा० नं० श० २ (शब्द ५७) सफा ४९१

जग जाग्रत भौ दुख मूल । सुपना भी दुख सुख सूल ॥ ॥ १ ॥
सुपपति कुछ घर आराम । वह भी नाहिं ठहरन धाम ॥२॥
तीनों में भरमत आठों जाम । पूरा नहीं कहीं विसराम ॥३॥
अब करिये कौन उपाय । कासे अब पूछूं जाय ॥४॥
तड़पूं और तरसूं निस दिन । बिरह अग्नि जलूं मैं दिन दिन
कोई राह न सुख की गावैं । सब करम भरम भरमावैं ॥६॥

कोइ तीर्थ वर्त बतावें । कोइ जप तप माहिं लगावें ॥७॥
निज भेद कहे नहिं कोई । बिरथा नर देही खोई ॥८॥
यह सोच करा मैं भारी । तब सतगुरु आन सम्हारी ॥९॥
कर दया भेद बतलाया । तुरिया पद मारग गाया ॥१०॥
तुरिया से आगे बरना । फिर उस्से आगे चलना ॥११॥
तिस के भी परे लखाया । उस सें भी पार सुनाया ॥
तिस परे और समझाया । कुछ आगे और बुझाया ॥१२॥

वहां से पुनि आगे भाषा । निज धाम मुख्य यह राखा ॥१४॥
संतन गति अगम सुनाई । जहां बेद कतेब न आई ॥१५॥
तुरिया में सब थक बैठे । आगे कोई मर्म न देखे ॥१६॥
इतने पद संत बताई । बिन सुरत शब्द नहिं पाई ॥१७॥
सतगुरु फिर भेद बतावें । अब खुल कर तोहि सुनावें ॥१८॥
तुरिया पद सहसकंवल में । तिस आगे चढ़ त्रिकुटी में ॥१९॥
दस द्वारा सुन में खोलो । फिर महासुन्न चढ़ तोलो ॥

चढ़ भंवरगुफ़ा तब आई। फिर सत्तनाम पद पाई ॥
वहां से भी चली अगाड़ी। हुई अलख पुर्य दरबारी ॥
जाय अगम लोक को लीन्हा। लीला सब वहां की चीन्हा
राधास्वामी धाम लखाया। अब यही ठीक घर पाया ॥२४॥
वह तुरियाभी नहीं पावें। बातों का तुरिया गावें ॥२५॥
तीनो में चेतन बरते। वाही को तुरिया कहते ॥२६
वाचक यह बड़े अन्याई। अवस्था चौथी सोऊ गंवाई ॥२७॥

जोगेश्वर ज्ञानी पिछले । चढ़ मूरधनी घट खेले ॥२८॥
उन चार अवस्था गाई । पंचम का चेतन भाई ॥२९॥
चारों से न्यारागाया । तांहि आतम भाप सुनाया ॥३०॥
इन मूरधनी घर त्यागा । मन अकाश आतम कह भाषा ॥३१
क्योंकर इन को कहूं बुझाई । इन वहुत ही धोखा खाई ॥२३॥
राधास्वामी कहत सुनाई । तुम वचियो इन से भाई ॥३३॥

सा० नं श ३ (शब्द ५८) सफ़ा १०२

आज दिवस सखी मंगल खानी ।
मैं राधास्वामी संग आरत ठानी ॥ १ ॥
तन मन थाल विरह कर जोती। सुरत निरत धुन माल परोती
गगन सिखर चढ़ अचरज देखूं । हंसन साथ महासुन पेखूं ३ ॥
चरण गहूं अब राधास्वामी के । आरत गाऊं प्यारे जीयके ॥४
छिन २ निरखूं छवि राधास्वामी। तन मन अरपूं दुख हरनामी
छिन२ निरखूं छवि प्रीतम की। तन मन अरपूं दुख हर हियेकी

कहां लग बरनू चोट बिरह की। कोई न जाने साल जिगर की।
बिरह अग्नि तन मन मेरा फूंका। झाल उठी जग दीन्हा लूका।
बिन राधास्वामी मोहि कौन सम्हारे।
लोक चार मेरे ज़रा न अधारे ॥ ९ ॥
मैं भई देही तुम भये स्वांसा। तुम बिन नहीं जीवन की आसा।
तुम भये मेवा मैं भई मोरा। तुम्हरे दर्श मैं करती शोरा ॥
मैं बुल २ तुम गुल की क्यारी। मैं कुमरी तुम सर्व अपारी।

तुम चंदा मैं रैन अंधियारी। तुम से सोभा भई हमारी ॥ १
प्रेम सिंध जब लहर उठाई। भरम कोट सब दीन बहाई ॥१४॥
काम क्रोध की बस्ती उजड़ी। आसा मनसा तन से बिछड़ी॥
लोभ मोह सब दूर निकारी। विषय बासना घट से टारी ॥१६
राज विवेक हुआ अब भारी। सुख पाया तन रैयत सारी १७
मैं दासी सतगुर चरनन की। किये हैं मनोरथ पूरण अबकी १८
कहां लग बरणूं महिमा उनकी। ख़बर पड़ी अब अनहद धुनकी

सुरत चढ़ी पहुंची ब्रह्मंडा। छोड़ गई यह खाकी पिंडा ॥२०॥
गगन मंडल जाय बैठक पाई। सुन्न महल में धधक चढ़ाई ॥२१
द्वारदसम का पाया मरमा। दूर किये सब कंटक करमा ॥२२
कर्म काट निज घर को चाली। माया ठगनी दूर निकाली ।२३।
महासुन्न का खेल दिखाना। क्या कहूं वहां का हाल पुराना ॥
सिंघ नाग जहां चौकी लाये। बिन सतगुर कोई पार न पाये
अंध घोर तिस आगे भारी। शब्द गुरू तहां कीन उजारी ॥२३॥

झंझरी पार झरोका देखा । संतन जाका बरना लेखा ॥ २७ ॥
दायें बाट गई दीप अचिंता । बाईं दिसा जहां सहज बसंता २८
मद्ध होय सूरत चढ़ी आगे । भंवरगुफ़ा जहां सोहंग जागे ॥
सोहंग से जाय भेटा कीन्हा । सत्तनाम धुन तापर चीन्हा ३०
अलख पुर्ष की धुन सुन पाई । तहां से अगम पुर्ष को धाई ।३१
अगम लोक जाय डेरा डाला । अब पाई पूरी टकसाला ॥३२॥
अब रहा आगे एक अनामी । कहा कहूं वह अकह कहानी ॥

अब आरत पूरन भई मेरी । दया करो स्वामी मैं बाल तेरी ३४

सा० नं० श० २ (शब्द ५९) सफा ७६

आज आरती इक कहूं भारी । सुमिरन राधास्वामी करूं अधारी
तिल का थाल जोत हुई बाती । प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आती
रूप अनूप हिये में लाती । दरशन राधास्वामी निज कर पाती
मैं चकवी सतगुर हुये चकवा । रैन भई तो हुआ विछोहा ॥४॥
मैं अज्ञान रैन वस पड़ी । वार रही और धीर न धरी ॥ ५ ॥

सतगुर पार बसेरा कीन्हा । क्यों कर मिलूं राह नहिं चीन्हा ॥
तड़पूं छिन २ पिया के बियोग । कस पाऊं अब पिया संयोग॥
अति आतुर घबराय पुकारी । तब स्वामी मेरी कीन सम्हारी
रात बिताई हुआ बिहाना । घट के भीतर भान उगाना ॥ ९ ॥
चक के बार पड़ी थी थोथी । गुर चक पार सुनाई पोथी ॥१०॥
गुरु से मिली खोल कर पाट । घाट बाट घट बांधा ठाट ॥११॥
लोहा ज्यों चुंबक संग मिली । सुरत शब्द से जाकर रली १२

सुरत दृष्ट कर द्वारा झांका । तोड़ा जाय सुई का नाका ॥ १३ ॥
भीतर धस जो लीला देखी । बरनूं कैसै बात अगम की ॥१४॥
अंतर जामी सतगुर जाने । और भेदी पुनि आप पाहिचानें १५
श्याम सेत के मद्ध समानी । घंटा संख सुनी धुन बानी ॥१६॥
सूर चांद दोऊ दिस देखे । सुखमन गगना तारे पेखे ॥१७॥
आगे धसी वंक की नाल । अब गत काल विछाया जाल ॥१८॥
आगे पंहुची त्रिकुटी द्वार । लाल रूप जहां धुन ओंकार ॥१९॥

सुन्न में गई महल दस माहिं। हंसन साथ मानसर न्हाय ॥२०॥
सेत २ वह सुन्न दिखाई। चंद्र चांदनी चौक लखाई ॥२१॥
सिखर चढ़ी पश्चिम के द्वार। महासुन्न के होगइ पार ॥२२॥
भंवरगुफ़ा का ताक उघारा।
सोहंग मुरली सुनी पुकारा॥
चौक परे सतलोक समानी।
सत्तपुर्ष धुन बीन बखानी॥

कोटिन सूर लगे इक रोम । कोटि २ जहां ऊगे सोम ॥
सत्तपुर्ष की आयस पाय । अलख लोक में पहुंची धाय ॥
अरब सूर ससि जहां लजायं । ऐसी सोभा देखी आय ॥
वहां से अज्ञा ले कर चली । अगम पुर्ष से जाकर मिली ॥
खरबन चंद्र सूर उजियारा । और कहूं क्या अगम पसारा ॥
वहां से भी फिर आगे बढ़ी । सुरत निरत निज पद में धरी ॥
निज पद है वह राधास्वामी । फिर२ कहूं मैं राधास्वामी ॥३१

(सोरठा) क्यों कर करूं बखान। महिमा में उस धामकी॥
नील २ ससि भान। इक २ कंगुरे लग रहे ॥३२॥
पदमन मणी जड़ी महलन में।
सोभा वहां की कहूं क्यों कर मैं ॥३३॥
संख और महा संख ससि भान। गिर्द सिंघासन देखे आन ३४
जस स्वरूप राधास्वामी धारा। सोभा वाकी अकह अपारा ३५
क्या दृष्टांत दऊं मैं सही। गिन्ती भी वाकी नहीं रही ॥३६

यह आरत मैं बढ़ की कही । कस बरनूं अब मीरी भई ॥३७॥

प्रे० था० १ नं० श० २७ (शब्द ६०) सफ़ा ४८

अरे मन भूल रहा जग माहिं । पकड़ ता क्यों नहीं सतगुर बाह
भरम ता निस दिन भोगन लार । मान धन इस्त्री संग पियार
मोह में जग के रहा भरमाय । लोभ और काम संग लिपटाय ॥
सार नर देही नहीं जानी । पशू सम बरते अज्ञानी ॥४॥
ख़ौफ़ मालिक का हिये नहीं लाय ।

गया अब जम के हाथ विकाय ॥ ५ ॥
मौत की याद विसार रहा। जगत को सत कर मांन रहा ॥७॥
न सुनता मूरख गुरु की बात। बुध मैली संग गोते खात ॥७॥
न छोड़े मन की कुटलाई। गुरू संग करता चतुराई ॥ ८ ॥
गुरू समझावें बारंबार। शब्द गुर धारो हिये पियार ॥९॥
होत तेरे घट में धुम हरदम। सुरत से सुनो चित्त कर सम
धार यह सुन घर से आती। अमीरस बरखत दिन राती ११

पकड़ कर चलो सुभ झनकार ।
वहां से सतपद धरो पियार ॥
निरख सतपुर में सतपुर्ष रूप ।
अलख और अगम लखो कुल भूप ॥ १३ ॥
परे लख राधास्वामी पुर्ष अनाम ।
वही हैं संतन का निज धाम ॥ १४ ॥
होय तब कारज तेरा पूर । काल और महा काल रहें दूर ॥ १५ ॥

भेद यह गावें गुरू दयाल । मेहर से तुझ को करें निहाल १६
नमाने भागहीन उनवात । भरम और संशय संग भरमात १७
फंसा मन माया की फांसी । कुमत ने डाली हिय गांसी ॥१८॥
रहा फिर हौमैं संग बंधाय । प्रीत गुरु प्रेमी संग नहीं लाय
नीच मन होय न सांचा दीन । मान मद हिरदे में भरलीन
कहो कस छूटें ऐसे जीव । प्रेम बिन कस पावें सच पीव २१
काल की खावें निसदिन मार । रोग और सोग संग बीमार २२

करें जो राधास्वामी अपनी मेहर ।
हटावें काल कर्म का कहर ॥ २३ ॥
सरन में ज्यों त्यों कर लावें । सुरत मन लव धुन रस पावें २४
बने कोइ दिन में तब इन काज । प्रेम का पावें अद्भुत साज
मेहर राधास्वामी विन कुछ नहीं होय
चरन में उनके सुरत समोय ॥ २६ ॥
भजो नित राधास्वामी नाम दयाल ॥

होय तब निरखल मन और काल ॥ २७ ॥
धार गह भक्ति भजन करना । रूप राधास्वामी हिये धरना
बढ़ाना नित चरनन में प्रीत । पकाना घट में गुरु परतीत ॥
बने जब डौल करो सतसंग । करो तन मन से सेव उमंग ॥
लगे तब तुम्हरा थल बेड़ा । चरन राधास्वामी हिय हेरा ३१॥
होश कर चेतो अब तन में । सरन गहो राधास्वामी अब मन में
नहीं तो भरमो चौरासी । सहो तुम फिर २ जम फांसी ॥३३॥

भूल और ग़फ़लत अब छोड़ो। चरन मे राधास्वामी मन जोड़ो
समझ यह दीन्ही खोल सुनाय। कोई बड़ भागी माने आय
मेहर राधास्वामी की पावे। जतन कर निज घर को जावे ३६
हुआ यह निज उपदेश तमाम।
गाऊं मैं छिन २ राधास्वामी नाम ॥ ३७ ॥

सा० नं० श- १ (शब्द ६१) सफ़ा ४२८

चार खान चौपड़ जग रची। अंड जेर सेतज उतभुजी ॥ १

माया ब्रह्म पुर्ष प्रकृती । मन इच्छा खेलें शिव शक्ती ॥ २ ॥
सुरत नर्द तामें बहु पची । धूम खेल की अति कर मची ॥ ३
तीन गुनन का पासा लीनि । रजगुन तमगुन सतगुन चीन ॥४
कर्म हाथ से पांसे डारे । भोग अंक तामें विस्तारे ॥ ५ ॥
झूठी बाज़ी जानी सच्ची । कोई पक्की कोई मारें कच्ची ॥६
नर्द सुरत चौरासी घर में । भरमत फिरे दुक्ख और सुख में
हारे ब्रम्ह और जीते माया । जीव नर्द बहु विधि दुख पाया ८

कभी ब्रह्म जीत जो होई। नर्द लाल होय ब्रह्म घर सोई ९

चैापड़ से वाहर नहीं होई। निज घर अपना पाये न कोई ॥१०

माया ब्रह्म खिलाड़ी दोई। खेले इन नरदन से सोई ॥११॥

भरमे नर्द पिटे और कुटे। दुख उनका कोई न सुने ॥१॥

सभी नर्द पछितावें दम २। कैसे छूटें इनसे अव हम ॥१३॥

करे फ़र्यादवाद नहीं पावें। रोवें झीकें और चिल्लावें ॥१४॥

वार २ भरमे चौरासी। कोई न काटे उन की फांसी ॥ १५ ॥

सुत स्मृत और वेद पुरान । सबही मारें इन की जान ॥१६॥
माया काल बिछाया जाल । अपने स्वारथ करें बिहाल ॥ १७॥
कोई गोट न जावे घर को । यहां ही खेल खिलावे सबको
सत्तपुर्ष देखा यह हाल । काल हुआ जीवन का काल ॥१९॥
अपने स्वाद जीव भरमावे । पता हमारा काहू न बतावे ॥
पुर्षदयाल दया उमगाई । संत रूप धर जग में आई ॥२१॥
नर्दन को बहु विधि समझाया । काल निरदई तुम को खाया

अव मैं कहूं करो तुम सोई। जाल जाल कर न्यारे होई २३
सतगुर संग वांध जुग चलो। चोट न खावो काल वलदलो
यह घर काल वसाया आन। तुम को लाया हमसे मांग २५
॥ दोहा ॥ यह तो घर है काल का। घर अपना मत मान
निश्चय करके मानियो। जो अव कुछ कहूं वखान २६
निज घर तुम्हरा हमरे देश। अव मैं कहूं देश संदेश २७
सतनाम सतपुर्ष कहाई। चौथा लोक संत कहें भाई २८

ताके परे अलखपुर बसा । संत सुरत बिन कोई न धसा
अगम लोक रचना तिस परे । बिन व्हां पहुंचे काज न सरे
आगे ताके निज घर जान । राधास्वामी धाम पिछान ३१
इन लोकन की सोभा भारी । देखे सो जिन जुक्त सम्हारी
अब जुक्ती का भेद सुनाऊं । सुरत शब्द की राह लखाऊं ३३
मन इंद्री उलटो घट माहीं । सुरत निरत दोऊ नैन जमाई ॥ ३४
सहसकंवल चढ़ त्रिकुटी आवो । सुन्न के परे महासुन्न पावो

भंवरगुफा सतलोक निहारो । अलख अगम के पार सिधारो
राधास्वामी कही बनाय । चौपड़ खेली अदभुत आय ॥ ३७॥
पौ पर बाज़ी अटकी आय । गुरु बिन पौ का दाव न पाय ३८
संत सतगुरू जो जन पाय । चौपड़ से बाहर हो जाय ॥ ३९
निज घर अपने जाय समाय । राधास्वामी दर्शन पाय ॥ ४०॥

प्रे बा १ नं श ७ (शब्द ६२) सफ़ा ९५

जगत में भूल भरम भारी । धार माया की नित जारी ॥ १ ॥

भींज रहे सब जीव माया रंग । उठावत मन नित नई तरंग २
भोग जग सब के मन भावें । पदारथ नित नये २ चावें ॥ ३॥
बिना धन काज नहीं सरते । तृश्ना धन की सब करते ॥४॥
जतन में धन कारन पचते । उमर भर मेहनत में खपते ॥५॥
मिला धन मगन हुए मनमें । नहीं तो दुखी रहें तनमें ॥६॥
क़दर नर देही नहीं जानी । दूध तज मांगत हैं पानी ॥७॥
ख़बर नहीं कहां से जीव आया । जगत में क्यों कर भरमाया ८

देह तज फिर कहां जावेगा। कहां यह दुखसुख पावेगा ॥९॥
देखते कुदरत की करतूत। बुद्धि से करते उसकी कूत ॥१०॥
समझ नहीं पाते को करतार।
थका उन बुधि बल करत विचार ॥११॥
ज़हूरा कारीगर का है। समझ नाहिं आवे कैसा है ॥१२॥
नहीं मन निश्चै लाता है। कोई रचना का करता है ॥१३॥
इसी से संशय में रहते। भरम कर चौरासी वहते ॥१४॥

खाने औ पीने में भूले। पहिर और ओढ़न संग फूले ॥१५॥
काम और क्रोध सतावें नित्त। लोभ और मोह चुरावें चित्त
मान मद भरमावत दिन रात। ईरखा नित्त जरावत गात।१
रोग और सोग सतावें आय। कहां लग विपत कहूं इन गाय
बहुर फिर भोगें चौरासी। कटे नाहिं कबही जम फांसी ॥१९॥
समझ जो कोइ सुनावे आय। भरम कर वचन न चित्त समाय
बड़ा मेरा जागा अचरज भाग।

चरन में राधास्वामी के मन लाग ॥२१॥
करी मोंपै धुर से दया अपार। दिया मोहि भेद सार का सार
जगत का दिखलाया सब हाल। लखाया मन माया का जाल
सुरत मन मेरे निरमल कीन। प्रेम और भक्ति दान मोहि दीन
मेहर कर दीनी दृढ़ परतीत। चरन में बढ़ती नित २ प्रीत
नाम की महिमां चित बसाय। सरन दे मुझको लिया अपनाय
गाऊं गुन राधास्वामी बारंबार। रहूं नित चरनन में हुशियार

तजूं मैं मन के सभी विकार । नाम राधास्वामी हिये सम्हार
कहे कोई कुछ जिव संसारी । वचन उन मन में नहि धारी॥
संत मत भेद नहीं जानें । गुरू की सीख नहीं मानें ॥३०॥'
नहीं कुछ सतसंग उन कीया । मूढ़ और मूरख जग रहिया ३१
मेहर मोपे कीनी गुरु प्यारे । भरम और संसे सब टारे ३१
सके नहीं कोई मोहि भरमाय । भरम सब दीने दुर बहाय
उमंग मेरे हिये उठती हर बार '

करूं स्वामी आरत साज संवार ॥३४॥

सुरत की थाली लेकर हाथ।

शब्द धुन जोत जगाऊं साथ ॥ ३५ ॥

सुरत को तान इष्ट कों जोड़। सुनूं मैं घट में अनहद घोर ॥

सहसदल घंट संख बाजे। गगन में धुन मिरदंग गाजे ॥ ३७॥

सुन्न चढ़ सारंगी सुनती। गुफ़ा में मुरली धुन गुनती॥३८॥

पुरुष का दरशान सतपुर पाय।

अलख और अगम को परसा जाय ॥ ३९ ॥
मिला राधास्वामी का दीदार ।
हुआ मोहि अब उन चरन अधार ॥ ४० ॥
दया राधास्वामी बरनी न जाय ।
लिया मोहि अपनी गोद बिठाय ॥ ४१ ॥
मेहर की दृष्ट करी भारी । सुरत हुई राधास्वामी प्यारी ४२

सा० नं० श० ८ (शब्द ६३) सफ़ा ४३७

पिया विन प्यारी कैसे होय निवाह ॥ टेक ॥
तू तो अचेत फिरे वैरानी । कस पावे सच शाह ॥ १ ॥
जक्त भाड़ में क्यों तू भुन्ती । पावे निस दिन दाह ॥ २ ॥
छोड़ उपाधि करो सत संगत । ले सतगुर से राह ॥ ३ ॥
इंद्री भोग विसारो मन से । छोड़ो सब की चाह ॥ ४ ॥
चेतन रूप विचारो अपना । फिर लगो शब्द वट आय ॥ ५ ॥
कहना मान पियारी मेरा । अब तैं पाया दाव ॥ ६ ॥

अव के चूके ठौर न पैहो । रहो बहुत पोछताय ॥ ७ ॥
ताते पहिले सोधो आपा । फिर सतनाम समाय ॥ ८ ॥
राह रकाना गुर से लेना । सरन पड़ो उन जाय ॥ ९ ॥
बिन सरना उन काज न सरिहै । ठग संग काहे ठगाय ॥ १० ॥
पंडित भेष देह अभिमानी । जग संग रहे गठियाय ॥ ११ ॥
कर्म भर्म संग हुये बावरे । तीरथ बरत पचाय ॥ १२ ॥
गंगा जमना मूरत मंदिर । माला तिलक लगाय ॥ १३ ॥

जप तप संजम और अचारा । ज़ात वर्ण लिपटाय ॥ १४ ॥
शिखा सूत और धोती पोथी । नेम धरम अटकाय ॥ १५ ॥
चौके बैठे मछली खावे । भक्त न साथ उपा लगाय ॥ १६ ॥
पानी साथ शुद्धता मानें । नाम महातम चित न समाय ॥१७
विद्या पढ़ २ मानी होवें । पत्थर पानी जक्त पुजाय ॥१८॥
दान पुन्य की महिमां गावें । देवी देवा रहे भुलाय ॥ १९ ॥
मथुरा काशी गया द्वारिका । पित्तर पूजा दाग़ दग़ाया ॥ २० ॥

चार धाम पिरथ्वी परिकर्मा । धूर फांक फिर घर को आय
कर्म चढ़ाये भर्म भुलाये । दुख भोगें कुछ लाभ न पाय ॥ २३॥
जड़ बुद्धी अभिमानी भारी । सतसंग वचन न चित ठहराय
गंगा जमना पाप कटावें । गोबर बछिया मूत पिलाय ॥ २५ ॥
पशू होय पशुवन को पूजें । पीपल तुलसी पेड़ लगाय ॥२६॥
नरदेही की सार न जानें । चौरासी में गोता खाय ॥ २७ ॥
संत सीत और गुरपरशादी । चरणामृत को दोष लगाय ॥२८॥

ऐसे मूरख भटका खावें । तुम उन संग करो मत भाय ॥२९॥
कथा पुरान सुनावत डोलें । जीवका कारन भटका खाय ३०॥
जीव अकाज न सोचें कबहीं । मान लोभ में रहे लिपटाय ३१
सुनत सुनावत मर्म न पावत अहंकार में रहे भुलाय ॥३२॥
भक्ति भाव को सार न जानत । जक्त ठगेरी निसदिन खाय ३
माया जाल विछाया भारी । रिषी मुनी सब घर-घर खाय ॥३४॥
दस औतार जती और जोगी । पंडित ज्ञानि रहे पछिताय ३५

संत मते की सार न जानें । काल मते में अवधि विहाय ॥३६॥
सतगुरु विन सब धोखा खावें । निज घर अपने कोई न जाय
जक्त जाल में रहें फंसाई । वार वार चौरासी धाय ॥ ३८ ॥
सुरत शब्द मारग अति सूधा । ताका मर्म न कोई पाय ॥३९॥
ऐसी भूल पड़ी जग माहीं । हम किस किस को कहें वुझाय
जो जो संत सरन में आवें । सो सो पावें घर की राह ॥ ४१ ॥
अब आरत सतगुरु की करहूं । वहुत कहा यह झगड़ा गाय ४२

सुरत चढ़ाय चलूं नभ ऊपर । सहसकंवल में बैठूं जाय ४३
वहां से बंक त्रिकुटी छेदूं । सुन्न सिखर में आसन लाय ४४
महासुन्न और भंवरगुफ़ा पर । सत्तलोक में पहुंची धाय ४५
अलख अगम के पार सिधारी । वहां आरती कीन्ही जाय । ४६
प्रेम ख़ज़ाना मिला अपारा । राधास्वामी लिये रिझाय ॥४७॥

प्रे० घा० १ नं० श० ३ (शब्द ६४) सफ़ा ७५

सुरत सिरोमन हेला लाई । सतगुर पूरा खोजो भाई ॥ १ ॥

जोत निरंजन फांसी डारा । जीव वहे चौरासी धारा ॥ २ ॥
करम धरम में सब भरमाये । निज घर का कोइ भेद न पाये ३
मैं अब कहूं पुकार पुकारा । बिन गुरु सरन नहीं निरवारा ४
पूरन धनी अपार अनामी । परम पुरुष सतगुरु राधास्वामी ५
जग में संत रूप धर आये । काल जाल से जीव बचाये ॥ ६॥
हुकम दिया जीवन को ऐसा । शब्द पकड़ जावो निज देशा ७
प्रेम भक्ति हिरदे में धारो । दया मेहर ले उतरो पारो ॥ ८ ॥

सुरत शब्द बिन जो मत होई । काल जाल जानो तुम सोई ९.
बाहर मुख जो पुजा लाते । मन अंतर जो ध्यान लगाते ॥ १०
बाच लक्ष का निरने करते । व्यापक चेतन बिरती धरते ११
कर बिचार जो मन को साधें । प्रान साध जो धरें समाधे १२
जप तप संजम बहु बिध धारें । दृष्टि साध कर रूप निहारें १३
और अनेक प्रकाश दिखाई । आतम दरशन चित में लाई १४
ऐसा खेल लखें घट माहीं । खट चक्कर अंतर भरमाई ॥ १५

यह सब मते काल को जानो । अंतरगत माया के मानो ॥१६
कोई दिन सुख आनंद बिलासा । फिर २ पड़े काल की फांसा
कोई जीव बचे नहीं भाई । काल हद्द से परे न जाई ॥ १८ ॥
तिरलोकी में काल पसारा । पांच तत्त तिरगुन बिस्तारा १९
दयाल देस तिरलोकी पारा । काल कर्म का वहां न गुज़ारा २०
जो कोई संत वचन को माने । दयाल देस की सो गत जाने
याते वार २ समझाऊं । संतन की गत अगम सुनाऊं ॥ २२ ॥

सतगुरु चरन प्रीत करो गाढ़ी ।
तन मन अरपो सूरत वारी ॥ २३ ॥
चरन सरन सतगुरु दृढ़ करना ।
रूप अनूप हिये बिच धरना ॥ २४ ॥
तब कुछ भेद समझ में आवे ।
सुरत शब्द का कुछ रस पावे ॥ २५ ॥
जीव काज अस होवे पूरा । काल करम हट जावें दूरा ॥२६॥

पंचम चक्र जीव का वासा। छठवें में है सुरत निवासा॥२७॥
यहां से राह संत मत जारी। नैन नगर बिच मारग धारी २८
सुरत दृष्टि कर झांको द्वारा। सहज चढ़ो खट चक्कर पारा
सप्तम कंवल सहसदल नामा।
जोत निरंजन का अस्थाना॥ ३०॥
घंटा शंख बजे तेहि द्वारे। सूरज चांद अनेक निहारे॥ ३२॥
व्यापक चेतन इसका भासा।

तीन लोक और पिंड निवासा ॥ ३२ ॥
ताका ज्ञान पाय यह ज्ञानी। कर उन मान हुये अभिमानी ३३
पोथी पढ़ बहु बात बनावें। निज चेतन का भेद न पावें ३४
निज चेतन है सिंध अपारा। दयाल देस में तासु पसारा ३५
बूंद एक वहां से चल आई। सोई निरगुन ब्रह्म कहाई ॥ ३६॥
इसका भास पिंड में आया। ताको व्यापक चेतन गाया ३७
जो कोई व्यापक निश्चे धारे।

मुक्त न पावे भरमे वारे ॥ २८ ॥
याते तजो निरंजन धामा । सतगुर देस करो विसरामा ३९
सतगुर पद सतलोक कहावे । जोत निरंजन जहां न जावे
सहसकंवल परे तीन अस्थाना । त्रिकुटी सुन्न औ गुफा बखाना
ताके परे धाम सत नामा । सतलोक सतगुर पद जाना ॥
अलख लोक तिस ऊपर होई ' ताके परे अगम है सोई । ४३॥
तिस के आगे धुरपद जानो । राधास्वामी धाम पहिचानो ४४

राधास्वामी नाम हिये बिच धारो ।
और नाम सब ही तज डारो ॥४५॥
राधास्वामी चरन बांध मन आसा ।
तब पावे सतलोक निवासा ॥४६॥
तन मन इन्द्री घट में घेरो । सुरत चढ़ाय करो घर फेरो ॥४७
हित चित से सतगुर संग कीजे ।
राधास्वामी दया मेहर तब लीजे ॥४८॥

या विधि जो कोई कार कमावे । काल देस तज निज घर जावे
दयाल देस में वासा पावे । राधास्वामी चरनन माहिं समावे
आरत हुई दास की पूरी । रहूं गुरु अंग संग तज दूरी ॥८१॥

सा० नं० श० १ (शब्द ६५) सफ़ा ६

चलोरी सखी मिल आरत गावें । ऋतु बसंत आये पुरुष पुराने
अलख अगम का भेद सुनावें । राधास्वामी नाम धरावें ॥१॥
सुरत शब्द की रेल चलावें । जीव चढ़ाय अगमपुर धावें ३

सतसंग धारा नितही बहावें । राधास्वामी छिन २ गावें ॥४॥
उमंग उमंग हिया भेट चढावें । काल जाल दुख दूर बहावें ५
ऐसे समरथ पुर्ष अपारा । दृष्ट जोड़ रहूं दर्श अधारा ॥ ६ ॥
पल पल खटकत विरह करारी । जस हूलत कोई भेल कटारी
बिन देखे दीदार न मानूं । जग संसार सभी विष जानूं ॥८॥
अमृत कुंड रूप राधस्वामी । अचवूं छिन छिन तब मन मानो
बिन राधास्वामी मोहिं कुछ न सुहावे

चार लोक मेरे काम न आवे ॥१०॥
ज्ञान ध्यान और जोग वैरागा। तुच्छ समझ मैंने इनको त्यागा
मैंतो चकोर चंद राधास्वामी। नाहिं भावे सतनाम अनामी
बिन जल मछली चैन न पावे। कंवल बिना अल क्यों ठहरावे
स्वांति बिना जैसे पपिहा तरसे। सुत वियोग माता नाहिं सरसे
अस अस हाल भया अब मेरा। कासे बरनूं कोई न हेरा १५
दान देय तो दें राधास्वामी। और न कोई ऐसा अंतर जामी

ऐसी भक्ति होय एकरंगी । काटे बंधन मन बहुरंगी ॥१७॥
राधास्वामी २ नित गुन गाऊं । चरन सरन पर हिया उमगाऊं
कहां लग बरनूं मेहर अपारा । दिन २ होवत मौज नियारा
जक्त जवि कहा समझे लीला । देख २ हंसन चित सीला २०
अब के दाव पड़ा मेरा सजनी । जब आयो राधास्वामी की सरनी
खुल गये भक्ति प्रेम भंडारा । कोटिन जीव का होय उधारा
चहुं दिस धूम पड़ी अब भारी । काल नगर मानो देहं उजाड़ी

स्वामी दयाल मौज ऐसी धारी । दीन होय तिस लेहैं उबारी
मैं किंकर उन चरनन दासा । सब जीवन को देऊं दिलासा
बांधि सुरत चरनन में राखो । अगम अपार अमीरस चाखो
हंस सभा कहा बरनूं सोभा । होवत जहां शब्दन की बरषा
चमकत बिजली गर्ज अकाशा । और कहा कहूं अजब तमाशा
बंक नाल के नाले छूटे । सुख मन नदियां भरम पुल टूटे २९
त्रिकुटी घाट बैठ मल धोई । मानसरोवर दुरमत खोई ३०

हंस रूप होय सुरत समानी । शब्द अगम धुन अंतर जानी ३१
महासुन्न के ऊपर गाजी । राधास्वामी होगये राज़ी ३२
भंवरगुफ़ा की खिड़की खोली । सतपुर्ष की सुन ली बोली ३३
हंस सभी अगवानी धांये । अलख लोक से लेवन आये ३४
सुरत सिरोमन पहुंची धाई । अलख पुर्ष का दर्शन पाई ॥३५॥
नाना विधि जहां बजत बधाई । हंस सभी मिल आरत लाई
अगम लोक जाय झंडा गाड़ा । अगम पुर्ष का भेद उघाड़ा ३७

वहां का मरम न कोई आखा । बिरले सत गुप्त कर भाखा
जीव दया अब अतिकर आई । राधास्वामी खुलकर गाई
मानोरे मानो जीव अभागी । राधास्वामी करिहैं सभागी ४०
धाओ दौड़ो पकड़ो चरना । जैसे बने तैसे आओ सरना ॥ ४१
फिर औसर नहिं पाओरे ऐसा । अब कारज करो जैसा रे तैसा
छोड़ो कर्म भर्म पाखंडा । सुरत चढ़ा फोड़ो ब्रह्मंडा ॥ ४२ ॥
जब होवे हिये सुरत अखंडा । पहुंचे सत्तलोक सचखंडा ४३

वहां से अलख लोक को धावे । अगम लोक में जाय समावे ४५
अगम पुर्ष का दरशन करई । अदभुत रूप सुरत जब धरई ४६
हंसा पांति जोड़ जहां बैठे । झुंड २ जहां रहैं इकठे ॥ ४७ ॥
अरबन खरबन भान उजारा । कहा कहूं सोभा भूम अपारा ४८
कंवलन क्यारी चहुं दिशि लागी । झालर मोती झुम २ आगी
राग रंग धुन अति झनकारा । अमीं सरोवर भरे हैं अपारा ॥५०।
हिरे लाल रतन की धरती । चांद सूरज की चादर तनती ५१

जहां राधास्वामी का तख्त विराजे । हंस मंडली अदभुत राजे
धूम धाम नित होत सवाई । आनंद मंगल दिन प्रति गाई ॥५३॥
ऐसा देश रचा राधास्वामी । निज भक्तन को करें विसरामी ॥५४॥

सा० न० श० १ (शब्द ६६) सफा ३२४

चेतो मेरे प्यारे तेरे भले की कहूं ॥ १ ॥
गुरु तो पूरा ढूंढ तेरे भले की कहूं ॥ २ ॥
शब्द रता गुरु देख तेरे भले की कहूं ॥ ४ ॥

तिस गुर सेवा धार। तेरे भले की कहूं
गुरु चरणामृत पी तेरे भले की कहूं ॥ ५ ॥
गुरु परशादी खाव। तेरे भले की कहूं ॥ ६ ॥
गुरु आरत करले तेरे भले की कहूं ॥ ७ ॥
तन मन भेट चढ़ाव तेरे० ॥ ८ ॥
वचन गुरू के मान तेरे० ॥ ९ ॥
गुरु को कर परसन्न तेरे० ॥ १० ॥

नित्त भजन कर नेम तेरे० ॥ ११ ॥
जीव दया तू पाल तेरे० ॥ १२ ॥
दुक्ख नदे तू काय तेरे० ॥ १३ ॥
वचन तान मत मार तेरे० ॥ १४ ॥
कड़ुवा तू मत बोल तेरे० ॥ १५ ॥
सव को सुख पहुंचाव तेरे० ॥ १६ ॥
नाम अमीरस पीव तेरे० ॥ १७ ॥

सील क्षिमा चित राख तेरे० ॥ १८ ॥
संतोष बिवेक विचार तेरे० ॥ १९ ॥
काम क्रोध को त्याग तेरे० ॥ २० ॥
लोभ मोह को टार तेरे० ॥ २१ ॥
दीन ग़रीबी धार तेरे० ॥ २२ ॥
संतों से कर प्रीत तेरे० ॥ २३ ॥
भोजन बहुत न खाव तेरे० ॥ २४ ॥

सतसंग में तू जाग तेरे० ॥ २५ ॥
मान बड़ाई छोड़ तेरे० ॥ २६ ॥
भोग बासना जार तेरे० ॥ २७ ॥
सम दम हिरदे धार तेरे० ॥ २८ ॥
वैराग भक्ति ना छोड़ तेरे० ॥ २९ ॥
गुरु सरूप धर ध्यान तेरे० ॥ ३० ॥
गुरु ही का जप नाम तेरे० ॥ ३१ ॥

गुर अस्तुति कर नित्त तेरे० ॥ ३२ ॥

गुर से प्रेम वढ़ाव तेरे० ॥ ३३ ॥

तीरथ मूरत भर्म तेरे० ॥ ३३ ॥

ज़ात अभिमान विसार तेरे० ॥ ३४ ॥

पिछलों की तज टेक तेरे० ॥ ३६ ॥

वक़्त गुरू को मान तेरे० ॥ ३७ ॥

तीरथ गुर के चरन तेरे ॥ ३८ ॥ ०
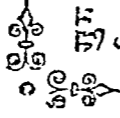
गुरु की सेवा वर्त तेरे० ॥ ३९ ॥
विद्या गुरु उपदेश तेरे० ॥ ४० ॥
और विद्या पाखंड तेरे० ॥ ४१ ॥
लीक पुरानी छोड़ तेरे० ॥ ४२ ॥
जो गुरु कहैं सो मान तेरे० ॥ ४३ ॥
मारग ज्ञान न धार तेरे० ॥ ४४ ॥
भक्ती पंथ सम्हार तेरे० ॥ ४५ ॥
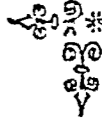
सुरत शब्द मत ले तेरे० ॥ ४६ ॥
सुरत चढ़ा नभ मांहि तेरे० ॥ ४७ ॥
गगन तिरकुटी जाव तेरे० ॥ ४८ ॥
दसवें द्वार समावं तेरे० ॥ ४९ ॥
भंवरगुफ़ा चढ़ आव तेरे० ॥ ५० ॥
सतलोक धस जाव तेरे० ॥ ५१ ॥
अलख अगम को पाव तेरे० ॥ ५२ ॥

राधास्वामी नाम धियाव तेरे० ॥ ५३ ॥
अटक अठक सब तोड़ तेरे० ॥ ५४ ॥
टेक पक्ष गुर बांध तेरे० ॥ ५५ ॥

प्रे० बा० ४ नं० श० २३ (शब्द ६७)

राधास्वामी सत मत जिसने धारा ।
सहज हुआ उन जीव उधारा ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन सरन सत धारी ।

वही जीव उतरे भौ पारी ॥ २ ॥
सुरत शब्द की जो करे करनी । वही जीव भौ सागर तरनी ३
प्रीत प्रतीत चरन में लावे । राधास्वामी दया सोई जीव पावे
सतगुर से जो प्रेम लगावे । राधास्वामी चरनन जाय समावे
गुर की प्रीत तुड़ावे बंधन । सहज ही वारे तन मन और धन ६
जग का मोह सहज में छूटे । तन मन बंधम बहु विध टूटे ॥७
विरह अंग ले करे अभ्यासा । प्रेम पंख ले उड़े अकाशा ॥ ८॥

गुरु सरूप का धर कर ध्याना। ताके घट में विमल निशाना ॥९

प्रीत सहित जो करे यह करनी। सुरत निरत निज पद में धरनी।

माया विघन न लागे कोई। शब्द रूप में सुरत समोई ॥ ११॥

निसदिन घट में आनंद पावे। राधास्वामी की महिमां गावे

मेहर दया का धार भरोसा। चित को अपने छिन २ पोसा १३

भोग बासना मन से टारे। मगन रहे चरनन आधारे ॥१४॥

मौज गुरू की सदा निहारै। रज़ा गुरू की सदा सम्हारै ॥१५

सतगुरु रक्षक तन मन प्रान । सतगुरु देवें भक्ती दान ॥१६॥
विना मौज गुरु कुछ नहिं होवे । मौज आसरे निर्भय सोवै १७
जिसको हुई अस गुरु परतीति । सोई जन कालकरम को जीति
जब कभी मन और चित घबरावै । घट में चरन ओर को धावै
और प्राथना करे घनेरी । देव सहारा काटो बेड़ी ॥ २० ॥
बहु बिध करम किये मन साथा । सो सतगुर काटें दे हाथा
कोई दिन करम भोग हट जावें । मेहर करें जल्दी भुगतावें

जब गुर में हुआ गहरा प्यार । शब्द भेद तब मिलिया सार
मन और सुरत चढ़ें ऊंचे को।उलट न देखें फिर नीचे को २६
राधास्वामी चरनन बढ़े पिरीती । धारे मन में दृढ़ परतीती
सतसंगी सब प्यारे लागें। गहरी प्रीत परस्पर पालें ॥
दया भाव जीवन में आवे । सुरत अस घट २ नज़र आवे ॥२७॥
सहज बिरोध अंग छुट जावे । हसद ईरषा नाहिं सतावे ॥२८॥
मन में रहै कोई नाहिं इच्छा । यही आस मालिक मिले सच्चा

यही आस बढ़ें दिन २ मन मैं। मालिक का दर्शन मिले तन मैं
काम क्रोध अस दूर बहावे। राधास्वामी चरन सरन लिपटावे
भरम और कपट होंय अस दूर। घट २ देखे सत का नूर ॥
जागत रहे उमंग नवेली। प्रेम रंग रहै सुरत रंगीली ॥३३॥
दीन ग़रीबी मन में धारे। प्रीत अंग घट में विस्तारे ॥३४॥
सब जीवन संग धरे पियारा। यह भी लागे सब को प्यारा

बाल दसा होय जग में वरते । मन में अकड़ पकड़ नहिं धरते
होय निः कर्म सबन से न्यारा ।
राधास्वामी बिन नहिं और सहारा ॥ ३७ ॥
संसै भरम न राखे कोई । मन में कभी निरास न होई ॥३८॥
दृढ़ बिसवास चरन में धारे । मुक्ति आपनी होत निहारे
गुरु दयाल भौ पार उतारें । कुल कुटंब को भी ले तारें ॥४०॥
क्या महिमा गुरु भक्ती गाऊं । गुरु की दया अपार सुनाऊं

निरमल भक्ति करे सोई सूरा । काज करें वाका गुर पूरा ॥४१

तासे बार २कहूं वचना । गुर भक्ती सम और न जतना ॥४३॥

याते सब कारज होय पूरे । करम काट पहुंचे घर मूरे ॥४३॥

गृहस्त होय चाहे हो वैरागी । गुर चरनन में जो लौ लागी

पुरुप होय चाहे इस्त्री होई । गुर के संग प्रीतकरे सोई ॥ ४६ ॥

सतगुरु वाका करें उधारा । मेहर दया से लेंहि सुधारा ४७

सब जीवों को चहिये ऐसी । गुरु संग प्रीत करें जैसी तैसी ४

तौ उन का भी कारज सरई। भौ सागर वे इक दिन तरई ४९
जग में जम का ज़ोर घनेरा। जीव करें चौरासी फेरा ॥५०॥
कोई जीव बचने नाहिं पावें। सतगुरु विन सब भटका खावें ५१
बड़ भागी जाय सतगुरु भेटें। चरन भेद दे घट में खेंचें ५२
सुरत शब्द का भेद सुनावें। ध्यान भजन की जुगत लखावें
सहसदल कंवल जोत दरसावें। अनहद घंटा संख सुनावें ५४
वंकनाल धस त्रिकुटी तीर। सुरत चढ़ी मिला पद गंभीर ५५

लाल सूर जहं गुरु का रूपा। ओंकार पद त्रिकुटी भूपा ५६
सुन में लखा चंद्र अस्थान। अक्षर पुरुष रकार निशान ५७
किंगरी वाजे और सारंग। छोड़े नीचे गरज मृदंग ॥५८॥
महासुन्न होय गई गुफ़ा में। सोहंग धुन सुनी सुरत सफ़ा में
सतलोक का द्वारा सोई। आगे चढ़ सुत शब्द समोई ६०
सत्तलोक सतपुरुष निवास। हंस करें जहां सदा विलास ॥६१
आगे अलखपुरुष दरबारा। तिस परे अगम लोक इक न्यारा

तिस के परे लखा धुर धाम । अरूह अपार अगाध अनाम ६३

हैरत रूप अथाह दवाम । राधास्वामी का जहं बिसराम ६४

हरख २ सुत अति मगनानी । राधास्वामी चरन समानी ६५

इति

बिला इजाज़त बाबू प्रेम परकाश उर्फ़ लाला अजुध्या परशाद
साहब ख़लफ़उलरशीद हुज़ूर महाराज राय सालिगराम
साहब बहादुर के कोई इस पोथी को नहीं
छाप सक्ता
आगरा
ईजाद किशन प्रेस में छापी गई
पहली बार १००० जिल्द) १८९९ ई० (मूल्य फ़ी पुस्तक ।-)